भजन विद्या

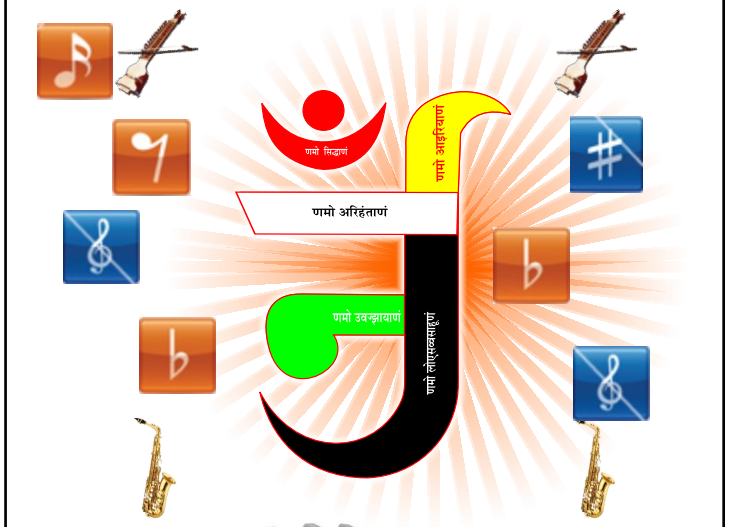

रचयिता

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

कृति : **भजन विद्या**

आशीर्वाद : परम पूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज

रचयिता : मुनिश्री 108 सुव्रतसागरजी महाराज

पावन संदर्भ : 2015 चातुर्मास गैरतगंज

प्रथम आवृत्ति: 1000

पुण्यार्जक : **विनय जैन S/o श्री कमलचन्द जैन-गैरतगंज**
उमेश सिंघई S/o श्री छोटेलाल सिंघई-गैरतगंज

सौजन्य : **अनन्त वेयर हाउस, गैरतगंज**
मो.: 9425493490, 8878650542

मूल्य : स्वपर कल्याण

मुद्रक : पारस प्रिंटर्स (पवन जैन)
207/4, साईंबाबा काम्पलेक्स, जोन-1
एम.पी. नगर, भोपाल
फोन: 0755-4260034, 9826240876

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ
1.	जय-जय विद्यासागर	1
2.	ओ! मंगलकारी	2
3.	थिरता कब पायें हम मन की	3
4.	कृपा गुरुदेव की	4
5.	मौत से हम	5
6.	मोह ने हम	6
7.	दीक्षा लेना खेल नहीं है	7
8.	हम प्यासे	8
9.	आप हमारे द्वार	9
10.	ओ! गुरुदेव	10
11.	गुरुवर के दर्शनों	11
12.	पानी की तरह	12
13.	पिच्छी गीत	13
14.	नाथ! आपके	14
15.	दुर्लभ गुरु	15
16.	सुन तौ लो	16
17.	गुरु जी सदा हि	17
18.	कुण्डलपुर के प्रभु	18
19.	भक्तों की पुकार	19
20.	विद्यासागर गुरु	21
21.	जिनवाणी स्तुति	22
22.	शरद पूर्णिमा के गुरुचन्दा	23
23.	चल मन! कुण्डलपुर को	25
24.	कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा.....	26
25.	क्या पाओगे तुम प्यारे	27
26.	मन को हम मन्दिर बनायें	28
27.	सुमर मन्त्र नवकारा	29
28.	गुरुवर कौ द्वारौ	30
29.	सुन लो एक पुकार	31
30.	मिल कैं करौ जय-जयकार	32
31.	सुभावना गीत	33
32.	कुण्डलपुर का क्या कहना	34
33.	अब मैं विद्यागुरु को पायौ	35
34.	विद्यागुरु मम हिय वसौ	36
35.	जप मन ! जप मन ! जप मन !	38
36.	भज मन ! भज मन! भज मन!	40
37.	विद्या गुरु को भज ले !	42
38.	प्रार्थना	44
39.	विद्यागुरु की वाणी	45
40.	णमोकार महामन्त्र	46
41.	विद्यावन्दना	48

42.	हे शान्तिदूत	49
43.	आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज	50
44.	इतना साहस हमें देना भगवन्	53
45.	विद्यागुरु ज्ञाता	54
46.	विद्यासागर – गाड़ी	55
47.	गुरुवर के संगै को रै है	56
48.	बड़े बाबा का भजन	58
49.	सच्चा रस्ता हमें देना गुरुवर	59
50.	किस्मत सँवर गयी	61
51.	अष्टाह्निका पर्व	62
52.	जिनवाणी – स्तुति	63
53.	गुरुदेव नाम है प्यारा	64
54.	चातुर्मास अष्टक (गीत)	65
55.	बुन्देली भजन	67
56.	हम गुरु विद्या पाय शरण को	68
57.	मंदिर गीत	69
58.	गुरुवन्दना	70
59.	फैशन पर बुन्देली व्यंग	71
60.	एकत्व गीत	74
61.	भजन	75
62.	जिनदर्शन स्तुति	76

63.	निरम्बर हैं	77
64.	मढ़िया जी भजन	78
65.	नन्दीश्वर द्वीप जिन आरति	79
66.	ये महफिल न होती	80
67.	जीवन रेल	81
68.	गुरु के चरणों को	84
69.	गुरु हमको दो साँची शिक्षा	85
70.	अभिषेक गीत	86
71.	आये है गुरुवर	88
72.	बिना दर्शन किये तेरे	89
73.	ये पापों के काम	90
74.	धीरे धीरे, सद्गुरु को	91
75.	हे विद्यागुरुवर!	92
76.	चौके में मुनि पड़गाएंगे	93
77.	गुरु चरण गीत	94
78.	रे मन! भज गुरु विद्या नाम।	95
79.	कदम कदम बढ़ाए जा	96
80.	आज मुनि चौक में आये	97
81.	कुटिया में आना	99
82.	मैं विद्यापद कब पाऊँगा	100

83. हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे 101
84. हमारी प्रार्थना 102
85. और मौत फिर भाग गयी 103
86. अब विद्या गुरु नाम भजौ 104
87. विद्या गुरु तज जाय कहाँ रे 105
88. महामन्त्र णमोकार 106
89. गुरुवर तेरी प्यारी सी 107
90. गुरु-विद्या बिन भव-भव रोये 109
91. गुरु ने हमारी नाव को 110
92. हे गुरुवर! तेरी पिच्छी बनू मैं 111
93. ओ! विद्या गुरु जी 112
94. गुरू जी सदा हि हम पे कृपा बनाए रखना 113
95. गुरु (प्रभु) दर्शन की मोह 114
96. सारी दुनियाँ भुला दी तुम्हारे लिए 115
97. मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ 117
98. गुरु तुम मिल गये 119
99. ढलते-ढलते हुये ज्ञान के सूर्य ने 120
100. श्रद्धा से बस याद करो तो 121
101. हे गुरु! हमको तेरी कृपा चाहिए 122
102. सारी दुनियाँ जिनको कहती, विद्यासागर संत हैं 123
103. गुरु (प्रभु) तुम हो मेरी, पतंग की डोर 124

104. गुरु कृपा की औषधि से 125
105. अब तक जो ना राह चुनी वो 126
106. देखो तो विद्या-गुरुवर, रत्नों को लुटाते हैं 127
107. गजल 128
108. हम इस कदर से 129
109. मेरे विद्या गुरु है बैरागी मेरे
110. थामे नाम जो तुम्हारा
111. चातुर्मास विदाई भजन
112. घर से निकलते ही
113. घर से निकलना है
114. भारत देश महान
115. मेरा भारत महान
116. जिनवाणी मैया
117. ओ! कुंडलपुर के बाबा
118. दुख दर्द का सागर है,
119. बहुत याद आते हैं
120. ओ!विद्यागुरु जी
121. ऐसी माटी न दुनियाँ
122. मन हो रऔ है चौका
123. बब्बा - बब्बा कहाँ के

1. जय-जय विद्यासागर

(:: लय-भजमन.....विद्यासागर ::)

वैराग्य छाँव गुरु की सुख नाव देती।
जो बैठने शरण में शिव गाँव देती।
हे नाथ! आप सबके भगवान स्वामी।
त्रैकाल में गुरु सदा तुमको नमामि॥

पूज्य नाम अपने गुरुवर का, प्राणों से ही प्यारा है।
गुरु दर्शन सब काम बनाता, सबका यही सहारा है॥
दीप जले हैं फूल खिले हैं, भले-भले गुरुदेव मिले।
पद-रज गुरु की शीश चढ़े तो, चन्दन बनकर भाग्य खिले॥ 1॥

जय-जय विद्यासागर.....८

कागज बन जाय यह भूतल, स्याही सागर का जल हो।
काष्ठ कमल हो लिखने तत्पर, सरस्वती का दल बल हो॥
फिर भी गुरु-गुण लिखे न जाय, महिमा अपरम्पार रही।
लेकिन गुरु-मूरत भक्तों ने, अपने मन में धार लही॥ 2॥

जय-जय विद्यासागर.....८

अतुलनीय विद्या गुरुवर जी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़ती, सज न सके आभरणों से॥
यों तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

जय-जय विद्यासागर.....८

जो पृष्ठ वायु सम रोज हमें चलाते।
अध्यात्म की मधुर तान हमें सुनाते॥
क्या भेंट में चरण में गुरु को चढ़ाऊँ।
मैं बार-बार सिर सादर ही झुकाऊँ॥

2. ओ! मंगलकारी

(:: लय- ओ पालन हारे ::)

ओ! मंगलकारी, जिनवर उपकारी। तुमरे बिन हमरी कौन सुने?
विपदाएँ टारो, हमको भी तारो.....तुमरे बिन.....
तेरा ऊँचा है नाम ठिकाना- तेरी महिमा का पार न जाना-
तुम अन्तर्यामी, भक्तों के स्वामी। तुमरे बिन.....
हमने तुमको ही अपना बनाया। मन के मंदिर में पूजा सजाया।
तुम हमको न छोड़ो, मुखड़ा न मोड़ो। तुमरे बिन.....
तेरी नजरों में है जादू टोना। हरती भक्तों का दुखड़ा गम रोना।
हम पर कृपा करो, हमरी व्यथा हरो। तुमरे बिन.....
हम तो तेरे हैं भक्त पुराने। तुम क्यों बन बैठे हमसे अनजाने।
सबको तुम बाँटो, हमको क्यों डाँटो। तुमरे बिन.....
हमारी नैया न निकली फँसी जो, सुन लो, होगी तुम्हारी हँसी हो।
सिर पर हाथ धरो, हमसे बात करो। तुमरे बिन.....
हमरी संकट में जान पड़ी है, हमरी नैया भँवर में खड़ी है।
तुम्हीं सहारे हो, तुम्हीं किनारे हो। तुमरे बिन.....
हमने चरणों में रख दी अर्जी, तारो या फिर डुबा दो तेरी मर्जी।
कोई शिकायत ना, कोई बगावत ना। तुमरे बिन.....
हमरी आँखों में तुम ही समाते, हमरी साँसों में हो आते-जाते।
भूलें माफ करो, हमरी लाज रखो। तुमरे बिन.....
जब जब जिसने तुम्हें तो पुकारा, तुमने आके उन्हें तो सँभाला।
दर्शन दो स्वामी, हर लो परेशानी। तुमरे बिन.....
ऋषि मुनि सब तेरे हैं दासा, देखो भक्त न लौटे उदासा।
ओ! मेरे गुरु भगवान, खुशियाँ दो सद्ज्ञान। तुमरे बिन.....

3. थिरता कब पायें हम मन की

थिरता कब पायें हम मन की[2]
कब सुख-दुख आकुलता त्यागें-[2], कर भावन आतम की।
थिरता.....

अपना आतम विमल सरोवर, मन दर्पण अविकारी।[2]
किन्तु इन्द्रियों मन के द्वारा-[2], मैला बना कुरंगी॥
थिरता.....

वैभवशाली अनुपम दानी, त्रय जग प्रभु कल्याणी।[2]
बना भिखारी दर-दर भटके-[2], करे गुलामी तन की॥
थिरता.....

चंचल मन दुख का सागर है, घोर दुखों की पूँजी।[2]
थिर मन सुख का पावन मंदिर-[2], कुंजी है शिव-धन की॥
थिरता.....

चिदानंद 'सुव्रत' का स्वामी, आतम है दृग-ज्ञानी।[2]
फँसा कीच कर्दम में विलखे-[2], सुध बुध क्या आतम की॥
थिरता.....

4. कृपा गुरुदेव की

(लय- सजन रे झूठ मत बोलो)

कृपा गुरुदेव की (जिनदेव) पाके, हमें भव पार जाना है।
न साथी है न संगाती, वहाँ अकेले ही जाना है॥

गुरु को जो भुलाते हैं,-
उन्हें गम कष्ट आते हैं।[2] .....
वही मँझधार में फँसते,
धरम जिनको बहाना है॥ 1॥ कृपा.....

अँधेरा मोह का हरते,
सबेरा ज्ञान का करते।[2] .....
गुरु की ज्योति पाकर के,
भरम अपने मिटाना है॥ 2॥ कृपा.....

जपो गुरुदेव की माला,
मिटे कर्मों का जंजाला।[2] .....
हमें गुरु की शरण पाके,
सदा सुख शांति पाना है॥ 3॥ कृपा.....

जपा गुरु नाम ना जिसने,
बढ़ाया रोग दुख उसने।[2] .....
हमें गुरु नाम भजकर के,
उन्हें मन में वसाना है॥ 4॥ कृपा.....

5. मौत से हम

(लय : इश्क में हम तुम्हें.....)

मौत से हम तुम्हें क्या बतायें, इस तरह खौफ खाये हुये हैं।
मौत से पहले-3, बेमौत मर के, जान अपनी गँवाये हुये हैं॥
मौत से.....

मौत के ख्याल जैसे हि आते, होश वैसे हम अपने गँवाते।
भूखे प्यासे-3, भटकते हैं दर दर, साँस अपनी छिपाये हुये हैं॥ 1॥
मौत से.....

सहमी-सहमी थमी दिल की धड़कन, जिस्म पै छाया मुर्दे सा मातम।
कोई दे-दे-3, अब साँसों का कर्जा, जिंदगी हम लुटाये हुये हैं॥ 2॥
मौत से.....

जब से की बन्दगी है तुम्हारी, मौत तब से डरी है हमारी।
मौत की सौत-3, हो जिंदगी ये, आरजू हम लगाये हुये हैं॥ 3॥
मौत से.....

6. मोह ने हम

(लय : इश्क में हम तुम्हें.....)

मोह ने हम तुम्हें क्या बतायें, किस तरह खेल खेले हुये हैं।
देह में हमको-3, बाँधा है और फिर, जिंदगी के झमेले हुये हैं॥

हमरी आँखों पे पर्दा चढ़ाता, चार गतियों में हमको घुमाता।
इसकी बातों में-3, आके तो हमने, कष्ट भव-भव में झेले हुये हैं॥ 1॥
मोह.....

कभी हमको ये राजा बना दे, कभी मारे रुलाये सजा दे।
सबका स्वामी-3, हुकूमत चलाता, हम तो इसके ही चेले हुये हैं॥ 2॥
मोह.....

कभी होके मेहरवाँ दिवाना, और लूटे ये अपना खजाना।
नाना रूपों में-3, सबको लुभाये, जिससे दुनियाँ के रेले हुये हैं॥ 3॥
मोह.....

जिसने चक्कर इसी का तजा है, उसका चेतन यहाँ पे सजा है।
मोह का उसका-3, बाजा बजा तो, उसके सुख के ही मेले हुये हैं॥ 4॥
मोह.....

7. दीक्षा लेना खेल नहीं है

दीक्षा लेना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से।
ये जंगों को जीत रहे हैं, बिन हथियारों तीरों से॥

संकल्पों की ज्वालाओं से, गम का सागर सुखा रहे।
प्रेम मित्रता का जल भरके, सुख की सरिता बहा रहे॥
खड़ग पै चलना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से। ये जंगों.....

ठण्डी गर्मी या वर्षा को, यों सहना आसान नहीं।
दुनियाँ को यों पीठ दिखाना, ये कायर का काम नहीं॥
केशों का लुंचन खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से। ये जंगों.....

कोई आग को उगल रहे हैं, कोई चलते आग पै।
कोई आग से जल जाते हैं, कोई सिकते आग पै॥
आग निगलना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से। ये जंगों.....

सब डरते हैं सुनो मौत से, इनसे डरती मौत है।
दिगम्बरों की मस्ती मित्रों, सुनो! मौत की सौत है॥
मौत से मिलना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से। ये जंगों.....

ऊपर से तुमको गम दिखते, अन्दर सरगम लहराते।
अजब रोशनी गजब दान दें, हर दिल में ये वस जाते॥
दिल में वसना खेल नहीं है, पूछो इन मुनि वीरों से। ये जंगों.....

8. हम प्यासे

हम प्यासे हमको ज्ञान की गंगा पिलाइए।
गुरुवर हमारे गाँव में इक बार आइए॥

ये झोपड़ी हमारी तो बूँदों को तरसती।
बदली जो भी आती, महलों पै बरसती॥]-2
अब हम पै आप प्रेम की धारा बहाइए। गुरुवर.....

चन्दना को जैसे महावीर जी मिले।
या अहिल्या को जैसे श्रीराम जी मिले॥]-2
त्यों हम है भरत आप राम बन के आइए। गुरुवर.....

बिना नीर जैसे मीन मरे तड़फ के।
आप बिना हम भी दुखी बड़े बिलखते॥]-2
हम बने जीवंत आप मन में आइए। गुरुवर.....

9. आप हमारे द्वार

आप हमारे द्वार पधारे–2, तब से खुशियाँ छायीं हैं,
बुरा न मानो ये आँखें तो, खुशियों से भर आयीं हैं॥

पूर चुके कितनी राँगोली, दीपक जले बुझे कितने।
बंधन–वारे तोरण–द्वारे, तोड़ सजाये हैं कितने॥
गम की बदली तुम्हें देख के–2, खुशियाँ जल बरसायीं हैं।
बुरा.....
देखत–देखत इन्तजार में, गिरे–फिरे पागल जैसे।
सुध–बुध खोके आकुल व्याकुल, मछली हो बिन जल जैसे॥
इन्तजार की मस्त हवायें–2, खुशबू तेरी लायीं हैं।
बुरा.....
हम जैसे तुमरे लाखों हैं, तुम सा हमरा कोई नहीं।
भूल हुयी क्या सोच–सोच ये, आतम हमरी सोई नहीं॥
कृपा मिली तो साँसें हमरी–2, जीने को ललचायीं है।
बुरा.....
पाप समय कायर बन जायें, धरम समय में वीर बनें।
हर्ष संपदा में विनयी हों, विपति कष्ट में धीर बनें॥
बस ऐसा ही वर दो हमको–2, झोली ये फैलायीं हैं।
बुरा.....

10. ओ! गुरुदेव

.....

ओ गुरुदेव..... मेरे प्यारे गुरुदेव।
देवों के देव, मेरे प्यारे गुरुदेव॥

साँचा तेरा नाम सहारा]
तुम बिन कोई नहीं हमारा।]–2
थामो मेरी डोर..... मेरा नाचे मन मोर। .....2.....
ओ! .....

जिधर नजर तेरी पड़ जाती]
चन्दन हो जाती वो माटी।]–2
दो मुझको आशीष..... मेरा झुकता हरदम शीश। 2.....
ओ! .....

दिल में गम–गम आँखें नम–नम]
बरसाओ अब करुणा रिम–झिम।]–2
जीवन खिले बहार..... मेरे स्वामी पालन हार। .....2.....
ओ! .....

11. गुरुवर के दर्शनों

(लय : मधुवन के मंदिरों में)

गुरुवर (बाबा) के दर्शनों को, नयना तरस रहे हैं।
आँखों के आँसू बनके, मोती बरस रहे हैं॥

दर्शन की आरजू है, अरमान वन्दना के।
मन बन्दगी के नगमे, गाता है गुनगुना के॥
खुद भेंट में हम चढ़ने, चरणों में बस रहे हैं .....

पथ रोशनी दिशा दो, ये भावना हमारी।
करुणा की छाँव रखना, तेरे हैं हम पुजारी॥
हमको किनारा दो हम, भँवरों में फँस रहे हैं .....

कैसे निहारें तुमको, क्या भेंट में चढ़ायें।
चादर हमारी मैली, गुण कैसे तेरे गायें॥
तेरी कृपा से हम तो, गम में भी हँस रहे हैं.....

12. पानी की तरह

(लय : घुँघरू की तरह.....)

पानी की तरह, बहता ही रहा हूँ मैं,
कभी इस घट में, कभी उस घट में,
भरता ही रहा हूँ मैं॥ पानी की .....

कभी बाँधा गया, कभी सींचा गया,
मुझे फेंका गया, कभी खींचा गया,
यूँ ही लुट-लुट के, यूँ ही घुट-घुट के,
जलता ही रहा हूँ, मैं॥ पानी की .....

मंदिर में गया तो खिल-खिल हँसा,
शमसान गया तो झर-झर बहा,
कभी उड़-उड़ के कभी डुल-डुल के,
मिटता ही रहा हूँ, मैं॥ पानी की .....

जब ऊँचा उठा तो बादल बना,
फिर नीचे गिरा तो दल-दल बना,
कभी दब-दब के कभी सड़ सड़ के,
सहता ही रहा हूँ, मैं॥ पानी की .....

गुरु-प्रभु के चरण अब धोने की,
मेरी इच्छा है, खुद पर रोने की,
प्यासा ही रहा, सागर की तरह,
तपता ही रहा हूँ, मैं॥ पानी की .....

13. पिच्छी गीत

(लय : हे गुरुवर धन्य हो तुम .....)

हे गुरुवर! तुम हमको, अपनी पिच्छी बना लेना।
हम सेवा में हाजिर हैं, हमें कमण्डल बना लेना॥

तन आसन परिमार्जन करने, आगे पीछे डोलेंगे।
पसन्द तुमको जो होगी वो, हम तो भाषा बोलेंगे॥
हाथों में हमको ले, संयम से सजा देना।
हे गुरुवर .....

बन जायें हम कमण्डलु तो, प्रासुक जल भर लायेंगे।
हाथ पाँव तन शुद्ध बना के, धन्य! धन्य! हो जायेंगे॥
कर्मों का प्रक्षालन, पद-रज से करवा देना।
हे गुरुवर .....

गुरु चरणों को केवल छू के, धरा धाम तीरथ बनते।
धन्य! धन्य! ये पिछी कमण्डल, जो गुरु हाथों में रहते॥
मुस्का के हे गुरुवर, हम पर करुणा कर देना।
हे गुरुवर .....

14. नाथ! आपके

(लय : कुन्दकुन्द से दिगम्बर)

नाथ! आपके पावन दर्शन, बार-बार पाऊँ।
सुनलो प्रार्थना, यही भावना, तुम सम बन जाऊँ॥
सुबह सुबह जब आँख खुले तो, तुम्हें निहारूँ मैं।
मुँह खोलूँ तो प्रथम आपका, नाम पुकारूँ मैं॥
श्वाँस-श्वाँस में तुम बस जाओ, गुण तेरे गाऊँ॥1॥सुनलो .....
बिन पानी के मछली थोड़ी, साँसे भी ले ले।
बिन माता के बालक थोड़ा, जीवन भी जी ले॥
पर तुम बिन मैं जिऊँ तो कैसे, तुम बिन अकुलाऊँ॥2॥सुनलो .....
तुम्हें भूल के तपा जला मैं, विरह वेदना से।
अब तो बादल करुणा कर तू, जल्दी बरसा दे॥
मुझ पर भी हो तेरी छाया, वरद हस्त पाऊँ॥3॥सुनलो .....
मुझसे तुमरे लाखों, तुम सा, कौन मिले मुझको।
कमल सरीखा मैं तुम सूरज, जीवन दो मुझको॥
जैसा रखना रख लो लेकिन, चरण शरण पाऊँ॥4॥सुनलो .....
धन-वैभव पद स्वर्ग मोक्ष का, कभी नहीं चाहूँ।
जनम-जनम बस चरण आपके, पूज-पूज ध्याऊँ॥
मरते दम तक तुम्हें न भूलूँ, 'सुव्रत' गुण पाऊँ॥5॥सुनलो .....

15. दुर्लभ गुरु

(दोहा)

दुर्लभ गुरु का नाम है, दुर्लभ गुरु का स्थान।
दुर्लभ गुरु दर्शन मिले, दुर्लभ गुरु मुस्कान॥

(रोला)

दुर्लभ गुरु मुस्कान नजर गुरु की पड़ जाना।
दुर्लभ गुरु पद ज्ञान वचन गुरु मुख से पाना॥
दुर्लभ गुरु गुण गान पले आज्ञा गुरुवर की।
हो सबका कल्याण, कहो जय-जय गुरुवर की॥

(दोहा)

दुर्लभ गुरु आशीष है, दुर्लभ गुरुवर दान।
दुर्लभ गुरुवर की शरण, दुर्लभ गुरु भगवान॥

योगी अपने
प्रतियोगी नहीं हैं,
सहयोगी हैं

16. सुन तौ लो

सुन तौ लो अर्जी हमारी, ओ! विद्या गुरु।
सुन तौ लो अर्जी हमारी॥ (ध्रुवपद) (2)

परी सबइ खौं अपनी-अपनी। (2)
कोऊ सुनैं नैं हमारी, ओ! विद्यागुरु॥ (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी॥ सुन तौ लो .....

जैसें भगवन् सुनैं भगत की। (2)
ऊँसई सुनौं तुम हमारी, ओ! विद्यागुरु॥ (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी॥ सुन तौ लो.....

जैसे हनुमन् राम खौ पूजै। (2)
ऊँसई बने हम पुजारी, ओ! विद्यागुरु॥ (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी॥ सुन तौ लो.....

धन दौलत हम खौं नँई चाने। (2)
चाने है शरणा तुमारी, ओ! विद्यागुरु॥ (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी॥ सुन तौ लो.....

करकैं किरपा अब 'सुव्रत' पै। (2)
दे दइयौ मोक्ष सवारी, ओ! विद्यागुरु॥ (2)
सुन तौ लो अर्जी हमारी॥ सुन तौ लो.....

17. गुरु जी सदा हि

(लय : दिन रात मेरे स्वामी)

गुरु जी सदा हि हमपै, कृपा बनाए रखना।
जो रास्ता सही हो, उसपै चलाए रखना॥ कृपा बनाए.....

अपने शरीर का तुम, रखते खयाल जैसे,
सन्मार्ग दे हमें भी, तुमने सँभाला वैसे।
वात्सल्य माँ के जैसा, हमपै बनाए रखना॥ जो रास्ता.....

जब से तिलक लगाया, सिर पर गुरु तुम्हारा।
सूरज से ज्यादा चमका, हमरे भाग्य का सितारा॥
छाया प्रसाद की तुम, हमपै बनाए रखना। जो रास्ता.....

आँखों की ज्योति तुम हो, हो आत्मा हो धड़कन।
तुम ही हमारी पूजा, परमात्मा हो भगवन॥
संसार के हितैषी, आशीष बनाए रखना। जो रास्ता.....

नहीं स्वर्ग मोक्ष पाना, नहीं रत्न फूल बनना।
गुरु के चरण शरण की, हमको तो धूल बनना॥
निर्वाण रथ पै स्वामी, हमको बिठाए रखना। जो रास्ता.....

कभी भूलने लगें तो, आगाह करना हमको।
कभी डूबने लगें तो, आ थाम लेना हमको॥
हमरी पतंग की तुम, डोरी थमाए रखना। जो रास्ता.....

18. कुण्डलपुर के प्रभु

(लय : तुमसे लागी लगन.....)

कुण्डलपुर के प्रभु, सुन्दर सबके प्रभु, अतिशयकारी,
आदिबाबा बड़े रूप धारी।
बुन्देली के प्रभु, सबसे नीके प्रभु, महिमाधारी,
जय हो, जय हो, हे बाबा! तुम्हारी॥ ध्रुवपद।

बाबा जैसा नहीं कोई दूजा, सारे जग ने जिन्हें रोज पूजा।
मूरत लाखों रहीं, बाबा जैसी नहीं, तारणहारी,
वीतरागी छवि न्यारी प्यारी॥ कुण्डलकुर के प्रभु.....

मूरत भाती सभी को तुम्हारी, दृष्टि चरणों में रहती हमारी।
हम भी पूजा करें, रोज अर्चा करें, चर्चा थारी,
चाहें बदले में शरणा तुम्हारी॥ कुण्डलकुर के प्रभु.....

चन्दा सूरज भी दर्शन को आते, दर्शन पाये बिना लौट जाते।
किसको शरणा मिली, किसकी किस्मत खुली, बारी-बारी,
पुण्यवाले बने, तव पुजारी॥ कुण्डलकुर के प्रभु.....

नैया संसार जल में फँसी है, सारे जग में भी होती हँसी है।
करुणा हम पर करो, तारो झोली भरो, हम भिखारी,
दे दो 'सुव्रत' को मुक्ति सवारी॥ कुण्डलकुर के प्रभु.....

19. भक्तों की पुकार

हम भक्तों ने तुम्हें पुकारा–2, गुरुवर देना साथ रे।
मेरे सिर पर रख दो हाथ रे! हो गुरुवर देना साथ रे। (ध्रुवपद)

मनमानी कर हमें रुलाते, लटके झटके दिखलाते।
अटकाते हमको भटकाते, घूँट–घूँट विष पिलवाते॥
स्वारथ के सब साथी जग में, हो–2, गुरु सच्चे माँ–बाप रे।
मेरे सिर पर रख दो...

कहाँ–कहाँ न तुमको खोजा, यहाँ विराजे आप हो?
धन्य हुये हम दर्शन करके, भूले दुख की बात हो॥
अपने से अब दूर न करना, हो–2, ले चलना अब साथ रे।
मेरे सिर पर रख दो...

बड़ी दूर से हम आये हैं, धक्के मुक्के खाकर के।
मीठी–मीठी बात करेंगे, ऐसी आश लगाकर के॥
आशा पर आसमान टिका है, हो–2, करना नहीं उदास रे।
मेरे सिर पर रख दो...

चरणों में ही हम रह लेंगे, रूखी सूखी खा लेंगे।
जो भी गुरु आज्ञा दे देंगे, पूरी उसे निभा लेंगे॥
सदा करेंगे सेवा स्वामी, हो–2, पूजेंगे दिन रात रे।
मेरे सिर पर रख दो...

क्या बिगड़ेगा गुरु तुम्हारा, दे दी जो हमको शरणा।
किन्तु हमारा भाग्य जगेगा, पाकर गुरुवर के चरणा॥
अर्जी हमारी मर्जी तुम्हारी, हो–2, कृपा करो अब नाथ रे।
मेरे सिर पर रख दो...

देखो तो गुरु आँखें खोलो, थोड़ा सा मुस्का दो ना।
मौन खोलकर कुछ तो बोलो, और हमें तड़पाओ ना॥
'सुव्रत' की लो खूब परीक्षा, हो–2, पर कर देना पास रे॥
मेरे सिर पर रख दो हाथ रे!
हो गुरुवर देना साथ रे!

हम भक्तो ने तुम्हें पुकारा, हो .....
हम भक्तों ने तुम्हें पुकारा, गुरुवर देना साथ रे!
मेरे सिर पर रख दो हाथ रे!

मुक्तक

मैं दीप बनकर जलने को तैयार हूँ, बस तुम इसमें प्रकाश भरते रहना ।
मैं नदी बनकर बहने को तैयार हूँ, बस तुम इसमें नीर भरते रहना ॥
आपके मात्र एक पद से मेरा, कल्याण अवश्य ही हो जायेगा ।
मैं धरती बनने को तैयार हूँ, बस तुम इस पर अपना विहार करते रहना ॥

20. विद्यासागर गुरु

(लय: तुमसे लागी लगन)

विद्यासागर गुरु, सुख की चादर गुरु, ज्ञानी ध्यानी।
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी॥
हम भी ज्ञानी बनें, आतम ध्यानी बनें, शिवसुख धामी।
ऐसी करुणा करो मोक्ष दानी॥ (2 बार)

आप ऊँचे रहे हो गिरि से, और गहरे हो सागर निधि से।
किन्तु मानी नहीं, खारे पानी नहीं, अमृत दानी॥
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी। विद्या.....

आप जगती सभा धैर्य धारे, और आकाश जैसे सहारे।
सबको आश्रय दिया, संबल साहस दिया, हित की वाणी॥
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी। विद्या.....

जग में फैला अँधेरा नशाते, पाप आतंक का भय हटाते।
चन्दा सूरज तुम्हीं, दीपक ज्योति तुम्हीं, आतम-ज्ञानी॥
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी। विद्या.....

आप रहते दिगम्बर विरागी, मान ममता जगत दोष त्यागी।
जग में पूजित तुम्हीं, गुणधन वन्दित तुम्हीं, बुद्धिमानी॥
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी। विद्या.....

हम पै किरपा करो गुरुवर मेरे, हम भी नाशे भवों भव के फेरे।
हम भी अच्छे बनें, 'सुव्रत' सच्चे बनें, सम्यकज्ञानी॥
हमको ले लो शरण अपनी स्वामी। विद्या.....

21. जिनवाणी स्तुति

(लय : दयाकर दान भक्ति का.....)

दयाकर ज्ञान तत्त्वों का, हमें दो भारती माता।
तिमिर अज्ञान पापों का, हरो जिन-सरस्वती माता॥
कही अर्हन्त देवों ने, वही है पूज्य जिनवाणी।
रही है अंग बारह मय, रचे गणधर महाज्ञानी॥
हरें मन के अँधेरे हम हमें श्रुत-दीप दो माता।
तिमिर अज्ञान पापों का, हरो जिन-सरस्वती माता॥
दया कर.....

यही पैनी रही छैनी, जुदा जिय कर्म करती है।
हरे भव ताप दुख जड़ता, यही सुख शांति करती है।
हमारी दूर भटकन हो, दिला दो राह जिन माता।
तिमिर अज्ञान पापों का, हरो जिन-सरस्वती माता॥
दया कर.....

रहे हम बाल अज्ञानी, नहीं कोई हमारा है।
शरण आये तुम्हारी माँ, यही साँचा सहारा है॥
भुलाकर भूल 'सुव्रत' की, भलाकर तार दो माता।
तिमिर अज्ञान पापों का, हरो जिन-सरस्वती माता॥
दया कर.....

(दोहा)

तत्त्व पदारथ द्रव्य का, जिनवाणी दे ज्ञान।
जग कल्याणी मात को, बारम्बार प्रणाम॥
माँ जिनवाणी जो भजे, पाले उसकी बात।
पहले सुख दोनों मिलें, बाद मोक्ष मिल जात।

22. शरद पूर्णिमा के गुरुचन्दा

शरद पूर्णिमा के गुरुचन्दा, हरो ताप भव का अँधकार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥

राहू केतु सब राग द्वेष जो,
ढाँक रहे हैं आतम रूप।
बने भिखारी भव-भव भटके,
वैभवशाली आतम भूप॥

तभी पिता माता बन्धू वा, त्याग दिये सारा संसार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 1॥ शरद...

मिथ्यातम राजा ने सबको,
लालच देकर किया गुलाम।
सम्यक् धर्म राज का कोई,
ना चाहे अब लेना नाम॥

अपनी एक कलापद देकर, करो हमारा अब उद्धार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 2॥ शरद...

ज्ञानामृत से अमर बनें हम,
ओ! चन्दा दो अमृत दान।
जैसे आप महान बने हो,
वैसे हम भी बनें महान॥

ज्ञान चरण विद्यापद से हम, खोलें मोक्ष महल के द्वार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 3॥ शरद...

दागी चन्दा आसमान का,
अल्प रहे कम करे प्रकाश।
वैरागी बेदाग चाँद तुम,
सम्यक् गुण का करो विकास॥

सो वह चन्दा गुरु चन्दा की, नित करता है जय जयकार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 4॥ शरद...

चाँद-सितारे जुगनूँ देखे।
दीपक मणियों को देखा।
आप अलौकिक पूज्य चन्द्र हो,
तुम सा ना जग में देखा॥

नाथ! आपके गुण क्या गायें, शीश झुकायें बारम्बार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 5॥ शरद...

मेरी है टूटी सी नैय्या,
तुम बिन कौन खिवैय्या है?
काम-बाढ़ भी बहुत तेज है,
बीच भँवर में नैय्या है॥

इसे सहारा गुरुवर दे दो, वरना सह ना पाये मार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 6॥ शरद...

गगन सितारे नभ में चमकें,
हुये चाँद से शोभित जो।
वैसे हम संसारी जन की,
शोभा बस गुरुवर से हो॥

तुम बिन कौन हमारा जग में, हे! उपकारी तारणहार।
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 7॥ शरद...

कृपा आपकी जो जन पाते,
होते है वे भव्य निहाल।
उभयलोक के वैभव पाते,
हो जाते वे मालामाल॥

कृपा सिन्धु आधार हमारे, 'सुव्रत' के गुरु पालनहार॥
मार्ग दिखाकर हाथ पकड़कर, हमें लगाओ भव से पार॥ 8॥ शरद...

23. चल मन! कुण्डलपुर को

चल मन! कुण्डलपुर को, चल मन! कुण्डलपुर को,
बड़ेबाबा के दर्शन करके, पावन कर ले उर को।
चल मन! कुण्डलपुर को, ... (मूलपद)(2)
बाबा जैसी सुन्दर मूरत, और न कोई दूजी। (2)
एक बार जो देखे उसने, बार-बार फिर पूजी॥ .....(2)
तू भी दर्शन कर ले बन्दे, उगा भक्ति अंकुर को।
चल मन! कुण्डलपुर को, ...
बाबा के दर्शन करने से, दर्शनीय बन जाते। .....(2)
पूजन अर्चन वन्दन करके, पूजनीय पद पाते॥ .....(2)
फिर क्या कहें ध्यान की महिमा, मत खो इस अवसर को।
चल मन! कुण्डलपुर को, ...
बाबा के अतिशय को देखो, महिमा खूब दिखाते। .....(2)
छोटे भक्तों के मन में भी, खुशी-खुशी आ जाते॥ .....(2)
जिसके मन में बाबा रहते, वे पाते सुरपुर को।
चल मन! कुण्डलपुर को, ...
अरे सुनो! इक बात सुनायें, बाबा के अतिशय की। ....(2)
मूरत भंजक को दिखलाये, कथा बड़े विस्मय की। .....(2)
दूध धार देखी ज्यों उसने, धोया अन्तःपुर को।
चल मन! कुण्डलपुर को, ...
जिसका पुण्य तेज होता वे, कुण्डलपुर को आते। .....(2)
तीर्थ वन्दना करें पुण्य से, बाबा के गुण गाते॥ .....(2)
'सुव्रत' धरकर कर्म नशाते, फिर पाते शिवपुर को।
चल मन! कुण्डलपुर को, ...चल मन! कुण्डलपुर को॥

24. कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा.....

कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा, आदिनाथ स्वामी बड़ेबाबा।
हम सबके रखवाले ....., हाँ-हाँ बड़ेबाबा॥ कुण्डलपुर...
बाबा की मूरत बड़ी न्यारी ..... हाँ-हाँ बड़ी न्यारी।
हमको लगती जो बड़ी प्यारी..... हाँ-हाँ बड़ी प्यारी॥
मध्य मध्य भारत में स्वामी, आप विराजे जग कल्याणी,
दर्शन की बलिहारी ..... हाँ-हाँ बड़ेबाबा॥ कुण्डलपुर...
करके नमन तुम्हें जो ध्याता ..... हाँ-हाँ जो ध्याता।
पद वैभव साँचा वो पाता ..... हाँ-हाँ वो पाता॥
धन वैभव की नहीं कामना, स्वर्ग मोक्ष की नहीं याचना,
सब कुछ यूँ ही देते ..... हाँ-हाँ बड़ेबाबा॥ कुण्डलपुर...
शरण आपकी है सुखकारी ..... हाँ-हाँ सुखकारी।
महिमा गाते सब संसारी ..... हाँ-हाँ संसारी॥
मिले आपकी शरणा जिसको, रहे परेशानी क्या उसको?
हमको शरणा देना ..... हाँ-हाँ बड़ेबाबा॥ कुण्डलपुर...
आप बड़ेबाबा कहलाते ..... हाँ-हाँ कहलाते।
पर छोटे मन में वस जाते ..... हाँ-हाँ वस जाते॥
'सुव्रत' के मन में भी आओ, कष्ट हरो दुख दूर भगाओ,
कर लो अपने जैसा ..... हाँ-हाँ बड़ेबाबा॥
कुण्डलपुर वाले बड़ेबाबा, आदिनाथ स्वामी बड़ेबाबा।
हम सबके रखवाले ..... हाँ-हाँ बड़ेबाबा॥

25. क्या पाओगे तुम प्यारे

जरा सोचलो, जरा समझ लो, भाई-बहन बच्चे सारे।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?
अगर पटाखे तुमने फोड़े, तो प्रभु वाणी ना पाली।
और सन्त उपदेशों की भी, पूर्ण अवज्ञा कर डाली॥
बहुत पाप का बंधन करके, बहुत जीव तुमने मारे।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 1॥
हुयी गंदगी जगह-जगह पर, हुआ प्रदूषित जग सारा।
बुरा असर आँखों पर पड़कर, बिगड़े तन स्वास्थ्य हमारा॥
हुआ समय बर्बाद शान्ति सुख संकट में प्राण हमारे।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 2॥
हुयी संपदा राख हमारी, जड़ चेतन की बर्बादी।
जीवन भी परतन्त्र हुआ सब, और छिनी सब आजादी॥
गया धर्म धन यौवन जीवन, तू क्यों न इसे विचारे।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 3॥
फोड़ो नहीं पटाखे यारो, लाभ बहुत सारे होंगे।
दान धर्म प्राणी की करुणा, सद्गुण सब विकसित होंगे॥
दीवाली खुशहाल बने वा, मंगलमय जीवन सारे।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 4॥
दीप जलाओ शुभ खुशियों के, नहीं पटाखे तुम फोड़ो।
नहीं किसी का हृदय जलाओ, दया अहिंसा तुम ओड़ो॥
हो उजियारा मन मंन्दिर में, दूर हटें सब अँधयारे।
फोड़ पटाखे, जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 5॥
जरा सोचलो, जरा समझ लो, भाई-बहन बच्चों सारे .....

26. मन को हम मन्दिर बनायें

तुम रहो या ना रहो पर, मन को हम मन्दिर बनायें।
आइये ना आइये पर, हम सदा तुमको बुलायें॥ मूलपद

मोड़ मुख हमको बिलखता, क्या पता कब छोड़ जाओ ?
भूलकर इस गाँव को फिर, क्या पाता आओ न आओ ?
किन्तु अविरल हम तुम्हारे, लौटने की लौ लगायें। आइये .....

छोड़ सकते भूल सकते, एक हमको बेसहारा।
फेर सकते दृष्टि हमसे, मोड़ सकते पथ किनारा॥
किन्तु चरणों को तुम्हारे, छोड़ क्या हम भूल पायें ? आइये .....

कष्ट पापों से धरा को, दूर कर तुम ही नशाते।
देखिये आश्चर्य यह तो, स्वर्ग भी भू पर न लाते॥
दूर नभ में तुम विराजे, हम वहाँ किस भाँति आयें। आइये .....

दूर पतझड़ को किया पर, क्यों नहीं मधुमास लाते?
जहर से हमको बचाया, पर नहीं अमृत पिलाते॥
हम अमा की रात फिर भी, दीप आशा का जलायें। आइये .....

वन्दना कर्तव्य पालन, साधना सेवा सिखाते।
किन्तु ख्याति तुम ना चाहो, अर्चना भी ना कराते॥
तुम सुनो या ना सुनो पर, हम तुम्हारे गीत गायें। आइये .....

जग छुड़ाते पथ दिखाते, और 'सुव्रत' को चलाते।
कर गये बैचेन हमको, मुक्ति का सपना दिखाके॥
तुम रखो या मत रखो पर, आपकी हम शरण आयें। आईये .....

27. सुमर मन्त्र नवकारा

रे मन! सुमर मन्त्र नवकारा। .....(2)(ध्रुवपद)

प्रथम देव अरिहन्त सुमर ले, सिद्ध नाम फिर दूजौ।
आचार्यों को तीजे भज ले, उपाध्याय फिर पूजौ॥
सुमर-सुमर सब जग के साधु-2, मन्त्र यही सुखकारा।
रे मन! सुमर मन्त्र नवकारा॥

जग में जितने मन्त्र मिलेंगे, यही जनक है सबका।
पाँच पदों में सार भरा सब, रोग हरे यह भव का॥
तारण-तरण हितैषी पालक-2, नैय्या खेवन हारा।
रे मन! सुमर मन्त्र नवकारा॥

विघ्न आपदाओं का नाशक, रोग शोक दुखहारी।
वैभव संपद यश सुखदायक, मंगल मंगलकारी॥
सबकी बिगड़ी यही बनाये-2, सबकी बिगड़ी यही बनाये।
रे मन! सुमर मन्त्र नवकारा॥

सब तीर्थों का तीर्थ यही है, पुण्य स्वर्ग का द्वारा।
सदा-सदा का यह साथी है, पथ पाथेय किनारा॥
दर्शन-ज्ञान यही 'सुव्रत' दे-2, मोक्ष महल दे न्यारा।
रे मन! सुमर मन्त्र नवकारा॥

28. गुरुवर कौ द्वारौ

(बुन्देली भजन लय : कैसे धरे मन धीरा रे)

गुरुवर कौ द्वारौ खूब सजौ रे! दर्शन करबे आये।
हाँ-हाँ रे! पूजन करबे आये॥ (मूलपद)

तीर्थंकर से गुरुवर मोरे,
समोसरण सौ संघ सजौ रे,]-(2 बार)
सुखी-सुखी सब प्राणी रे! आरती करबे आये।
हाँ-हाँ रे! भगतें करबे आये॥ गुरुवर कौ....

दिव्य धुनी सी प्रवचन कक्षा,
सबइ जनौं की इतै सुरक्षा,]-(2 बार)
काल लगै चौथौ जैसों, वन्दन करबे आये।
हाँ-हाँ रे! वन्दन करबे आये॥ गुरुवर कौ....

अपने हाथ मूड़ पै धर दो,
अपनी करुणा मौ पै कर दो,]-(2 बार)
खाली झोली भर दो रे! आशा लैं कैं आये।
हाँ-हाँ रे। दासा बन कै आये॥ गुरुवर कौ.....

विद्या माया तुमरी दासी,
तुम वैरागी गुरु संन्यासी,]-(2 बार)
मुक्ति रमा के स्वामी रे! सेवा करबे आये।
हाँ-हाँ रे! देवालय में आये॥ गुरुवर कौ.....

तारनतरन सबई के पालक,
शिवपुर-गाड़ी के तुम चालक,]-(2 बार)
'सुव्रत' खौं दइयौ शरणा रे! पाइयाँ परबे आये।
हाँ-हाँ रे! छइयाँ लै बे आये॥ गुरुवर कौ....

29. सुन लो एक पुकार

(लय : कर तू प्रभु का ध्यान ओ बाबा.....)

सुन लो एक पुकार, ओ बाबा, सुन लो एक पुकार।
कर देना उद्धार..... ओ बाबा ..... कर देना उद्धार॥ (ध्रुव)

जगह-जगह पर तेरी चर्चा, होती अर्चा मिलता नाम।
इसीलिए तो हम आयें हैं, तीरथ जैसे तेरे धाम॥
बोलें जय-जयकार ..... ओ बाबा ..... बोलें जय-जयकार। कर देना...

भव जंगल में भटक गये जो, उन्हें राह तुम दिखलाये।
भवसागर में डूब रहे जो, उन्हें किनारे पर लाये॥
नैय्या खेवन हार ..... ओ बाबा ..... नैय्या खेवनहार। कर देना...

किसे निहारें ? किसे पुकारें ? स्वारथ की सारी दुनियाँ।
कैसे रहें ? कहाँ हम जायें ? भूल भुलैया ये दुनियाँ॥
जग के पालन हार ओ बाबा ..... जग के पालनहार। कर देना...

आँखें खोलो मुँह से बोलो, नहीं परीक्षा ज्यादा लो।
पूरी इच्छा करो हमारी, एक प्रार्थना जा सुन लो॥
साँचा तेरा द्वार ..... ओ बाबा ..... । कर देना...

जिसने तुमको मन से ध्याया, किया समर्पण सब अपना।
भरी आपने उसकी झोली, किया पूर्ण उसका सपना॥
दाता तू हितकार ..... ओ बाबा ..... दाता तू हितकार। कर देना...

हमें संपदा भव वैभव की, भूख नहीं न कोई प्यास।
बस अपनी शरणा दे देना, चरणों का बन जाऊँ दास॥
'सुव्रत' की सरकार... ओ बाबा... सुव्रत की सरकार। कर देना...

30. मिल कैं करौ जय-जयकार

(तर्ज : नाचै जौ मन कौ मोर रे....)

मिल कैं करौ जय-जयकार रे! - 2 बार
भक्तों के भगवन् गुरुवर पधारे, मिल कैं करौ जय-जयकार रे! (मूलपद)
करकै हिंसा के पापों खौं, दुखी दुखी हैं संसारी।
कोनउँ साथी सग्गौ नइयाँ, स्वारथ की दुनियाँदारी॥
आदत तौ अपनी सुधार रे, आदत तो... मिल कैं ....
कबउँ-कबउँ तौ बड्डे बन कै, दुनियाँ भर पै राज करौ।
और बने जब सबसैं नन्ने, दुनियाँ कौ डर खाय गयौ॥
जीवों पै करुणा तौ धार रे, जीवों पै करुणा तौ धार रे।
गुरुवर की चर्या में करुणा झलक रई, जीवों पै.... मिल कैं....
इतै उतै तौ कब सैं फिर रए, भटक-भटक मारे-मारे।
अब तौ गुरु के चरण पखारौ, हो जायें वारे-वारे॥
किस्मत तौ अपनी सँवार रे, किस्मत तौ अपनी सँवार रे।
गुरुवर के द्वारे में लुट रव खजानौ, किस्मत तौ अपनी...मिल कैं ...
करें गुलामी काया की हम, तीर्थ करें सब मनमाने।
दुनियाँ की तौ खबर रखैं पै, फिरै खुदई सैं अनजाने॥
आतम तौ अपनी निखार रे, आतम तौ अपनी निखार रे।
गुरुवर के हिरदे सैं इमरत बरस रव, आतम तौ अपनी.... मिल कैं...
तन्त्र मन्त्र माया के लानैं, स्वांग रचा कैं राम भजै।
सम्यग्-विद्या खौं नै पूजौ, नैं करुणा के काम करै॥
मुक्ति कौ कर लो विचार रे, मुक्ति कौ कर लो विचार रे-
गुरुवर के 'सुव्रत' सबसैं जा कै रय, मुक्ति कौ कर लौ विचार रे!
मिल कैं करौ...

31. सुभावना गीत

बनें निरम्बर प्रभु को ध्यायें,
हम ऐसे मुनि कब बन जायें।....2
छोड़ें जग जंजाला- हो आतम ध्यायें..... ॥ बनें.....
कंचन कांच एक सम जानें..... हाँ..... हाँ..... सम जानें।
शत्रु मित्र को सम पहचानें..... हाँ..... हाँ..... पहचानें॥
महल मसान मरण जीवन में, लाभ अलाभ मिलन बिछुड़न में,
खेद हर्ष ना धारें..... हाँ..... समता लायें.... ॥ बनें....
वास करें हम गिरि शिखरों पै, हाँ..... हाँ..... शिखरों पै॥
वन उपवन में नदी तीरों पै, हाँ..... हाँ..... तीरों पै॥
कोटर कन्दर गुफा वास हो, आशा तज आतम निवास हो।
पिछी-कमण्डल धारें..... जिन रूप सजायें.... ॥ बनें....
राग द्वेष आलस हम त्यागें...हाँ..... हाँ.....हम त्यागें।
तत्त्व भावना उर हम लावें, ...हाँ..... हाँ हम लावें॥
घोर परिषह उपसर्गों से, विचलित ना हो निज धर्मों से।
भाव विकारी जीतें, अपना धन पायें॥ बनें...
कर्म घातिया कब नश जायें...हाँ..... हाँ नश जायें।
केवलज्ञानी कब बन जायें...हाँ..... हाँ बन जायें॥
दोष रहित सर्वज्ञ बनें हम, हरें अघाति मोक्ष गहें हम।
बन जायें अविनाशी, हाँ शिवपुर पायें॥ बने.....
आज नहीं तो कल हो जावे...हाँ..... हाँ हो जावे।
पूर्ण भावना ये हो जावे...हाँ..... हाँ हो जावे॥
करें साधना 'सुव्रत' धारें- कंचन जैसा आत्म निखारें।
दयाधर्म अपना हो.... जिन महिमा गायें॥ बनें.....

32. कुण्डलपुर का क्या कहना

दुनियाँ में तीर्थ हजारों है पर, कुण्डलपुर का क्या कहना ?
जिनके मन्दिर का क्या कहना ? हो बड़ेबाबा का क्या कहना ?
दुनियाँ में.....
कुण्डलपुर में कुण्डल जैसा, गगन चूमता पर्वत है।
जिस पर बीचों बीच केन्द्र में, आदिनाथ का क्या कहना ?
दुनियाँ में.....
जग की शान रहे बड़ेबाबा, भक्तों के भगवान रहे।
प्राण रहे है बुन्देली के, छोटेबाबा क्या कहना ?
दुनियाँ में.....
कहीं-कहीं तीरथ अतिशय के, कहीं सिद्ध तीरथ प्यारे।
सिद्ध और अतिशय वाला जो, कुण्डलपुर का क्या कहना ?
दुनियाँ में.....
छोटे और बड़ेबाबा की, जोड़ी जग विख्यात रही।
किरपा बड़े की बरसे जग में, छोटे की करुणा क्या कहना ?
दुनियाँ में.....
ज्ञान संपदा 'सुव्रत' चाहें, करके भक्ती बाबा की।
शरण मिले दोनों बाबा की, मोक्ष मिले तो क्या कहना ?
दुनियाँ में.....
रोते-रोते आने वाले, हँसते-हँसते जाते हैं।
बाबा की महिमा क्या गायें ? भक्तों का भी क्या कहना ?
दुनियाँ में.....

33. अब मैं विद्यागुरु को पायौ

अब मैं विद्यागुरु को पायौ, गुरु चरणन चित लायौ।
पाप नशे सब पुण्य मिला है, मिथ्यातम मिट जायौ।
समदर्शन की ज्योति जली है, मोक्षमार्ग को पायौ ॥1॥
अब मैं विद्यागुरु को पायौ .....
विषयों से आसक्ति नशी है, योग ध्यान अपनायौ।
रागद्वेष मद मोह घटा है, समता रस अब भायौ ॥2॥
अब मैं विद्यागुरु को पायौ .....
भव कानन से मैं घबराया, वन एकान्त सुहायौ।
सो बनकर निर्ग्रंथ दिगम्बर, निर्मल आतम ध्यायौ ॥3॥
अब मैं विद्यागुरु को पायौ .....
झूठा उद्यम खूब कियो है, दुर्गति पथ अपनायौ।
झूठी काया झूठी माया, अब तक समझ न पायौ ॥
अब मैं विद्यागुरु को पायौ .....
देव शास्त्र गुरु धर्म न भाये, सो भव दुख को पायौ।
पर अब मुक्ति रमा पाने को, 'सुव्रत' धर सिर नायौ ॥
अब मैं विद्यागुरु को पायौ .....

34. विद्यागुरु मम हिय वसौ

(लयः ते गुरु मेरे उर वसौ.....)

विद्यागुरु मम हिय वसौ, तारणतरण जहाज।
स्वामी जग पालक प्रभो, हितकारी ऋषिराज ॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
ग्राम सदलगा जन्म ले, किया सभी को धन्य।
मात पिता सबको तजा, समझ सभी को अन्य ॥1॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
पाले पंचाचार नित, धारें गुण छत्तीस।
मुक्ति रमा पाने चलें, दे सबको आशीष ॥2॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
सहते है उपसर्ग चतु, परिषह भी बाईस।
ठण्डी वर्षा ग्रीष्म में, साम्य रखे जगदीश ॥3॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
भाग्योदय सर्वोदयी, सिद्धोदय के नाथ ।
तीर्थ दयोदय दे किया, शुद्ध हमारा पाथ ॥4॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
ज्ञान सिन्धु के शिष्य जो, और श्रेष्ठ गुरु संत ।
वे विद्यासागर सदा, यहां रहे जयवन्त ॥5॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....

भव भोगों से जो डरे, जो धारे शिव पन्थ ।
सभी परिग्रह त्याग जो, नग्न बने निर्ग्रंथ ॥6॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
राग द्वेष मद मोह भय, और तजे सब दोष ।
बने जितेन्द्रिय मोहजित, निर्मल सद्गुण कोष ॥7॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
क्षण भंगुर जीवन गिना, मेघ चपल से भोग ।
तज असार संसार को, हुये स्वस्थ धर योग ॥8॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....
सभी जगत् पावन हुआ, हुये जीव कृतकृत्य ।
'सुव्रत' पालक गुरु शरण, पाए हरो दुष्कृत्य॥
विद्यासागर गुरु मम हिय वसौ.....

मुक्तक

आचार में अहिंसा भाव विद्यमान है॥
विचारों में तो अनेकान्त का ही ध्यान है॥
वाणी द्वारा स्याद्वाद का वखान है॥
निर्ग्रंथ रूप जिनधरम ही महान है॥

35. जप मन ! जप मन ! जप मन !

जप मन ! जप मन! जप मन! विद्या गुरु को जप मन !
जप मन ! जप मन!.....
कभी सोचता जग के सपने, कभी चाहता वैभव ।
कभी बनाये महल अटारी, कभी चाहता परभव॥
इसीलिए तो इनमें उलझे, पाए नहीं आतम धन ॥1॥
जप मन ! जप मन!.....
कभी पुत्र बन्धु पा रोये, कभी रोय पाने को ।
कभी खुशी भोगों को पाकर, कभी दुखी पाने को ॥
पाकर संतुष्टि न पायी, नहीं मिले सुख के क्षण ॥2॥
जप मन ! जप मन!.....
कभी देह सजाने भटके, कभी सजाकर भटके ।
कभी सुधा पीकर दुख पाये, कभी जहर को गटके ॥
सदा मरे हम अमर भये ना, बन ना पाय निरंजन ॥3॥
जप मन ! जप मन!.....
राग द्वेष की माला फेरी, मंत्र जपा कुछ पाने ।
देव कुदेवों को नित पूजा, स्वार्थ पूर्ण करवाने ॥
बने मूढ़ मोही जग में हम, धरा न शिव को संयम ॥4॥
जप मन ! जप मन!.....
मात-पिता की बात न मानी, ना की उनकी सेवा ।
ना दुखियों पर करुणा की सो, दुखी हुये स्वयमेव ॥

तुमको निज अधिकार मिलेगा, किन्तु करो कर्त्तव्यन ॥5॥

जप मन ! जप मन!.....

तीर्थक्षेत्र यात्रा करके मैं, गोद पुण्य से भरता ।
ख्याति नाम पूजा पाने को, त्याग दान सब करता ॥
नही धर्म को समझ सका मैं, नहीं शुद्ध चेतन धन।

जप मन ! जप मन!.....

बना विरागी जग ठगने को, त्याग तपस्या धारी ।
जगत् रिझाने को मैंने सब, चर्या की मनहारी ॥
स्वार्थ त्याग मैं कर ना पाया, ना परमार्थ उपार्जन ॥7॥

जप मन ! जप मन!.....

कभी जगत् पर रौब जमाया, कभी सताये प्राणी ।
खोटे चिंतन खूब किये है, भायी ना जिनवाणी ॥
आर्त रौद्र ध्यानों को तजकर, धर्म शुक्ल का चिंतन ॥8॥

जप मन ! जप मन!.....

भव सागर का मिले किनारा, चतुगति से छुटकारा ।
शरण पांच सच्चे गुरुओं की, सच्चा धर्म सहारा ॥
सब कुव्रत तज 'सुव्रत' पूजैं, विद्यागुरु के चरणन ॥9॥

जप मन ! जप मन!.....

36. भज मन ! भज मन! भज मन!

भज मन! भज मन! भज मन! विद्यागुरु को भज मन !

भज मन! भज मन! .....

कर्नाटक के सन्त निराले, सब जग के रखवाले ।
मल्लप्पा श्रीमति के लाला, शिव पथ चलने वाले ॥
सभी कर्म को तजकर चेतन, पूज इन्हीं के चरणन ॥1॥

भज मन! भज मन! .....

ज्ञान सिन्धु के शिष्य गुरु जो, चतुर्संघ के स्वामी ।
तारणतरण जहाज मुनि जो, आगम पथ अनुगामी ॥
इनको कीजै आत्म समर्पण, कर इन जैसा तन मन ॥2॥

भज मन! भज मन! .....

जो छत्तीस मूलगुण धारें, नग्न रूप अविकारी ।
मोक्ष मार्ग पर चलें चलाते, निज पर के उपकारी ॥
पाकर इनकी चरण शरण को, तज ले भव भव भटकन ॥3॥

भज मन! भज मन! .....

भाग्योदय सिद्धोदय दाता, सर्वोदय निर्माता ।
धर्म अहिंसा के रखवाले, दिशा दयोदय दाता ॥
कुमति कुपथ हिंसा को तज दे, पाकर गुरु निर्देशन ॥4॥

भज मन! भज मन! .....

सब ग्रन्थों का सार बताते, अघ अज्ञान मिटाते ।
स्याद्वाद से मत बतलाते, अनेकान्त समझाते ॥

दुर्नय दूर भगा ले भैया, पाकर सम्यक् अधिगम् ॥5॥

भज मन! भज मन! .....

जो भी इनका नाम जपे वो, दोनों लोक सुधारे ।
और कर्म को नाश वही तो, लोकालोक निहारे ॥6॥
सो शिव सुख को पाने प्यारे, इनका ही कर चिंतन।

भज मन! भज मन! .....

चरण धूलि से कर्म धूलिको, नाशो प्यारे भाई ।
पूजा अर्चा पूज्य बनाती, गुरु माला सुखदाई ॥
कर गुणगान सदा गुरुवर का, शुद्ध बने तब चेतन ॥7॥

भज मन! भज मन! .....

यह संसार महादुखदायी, भोग रोग की ज्वाला ।
जड़ संपद कष्टों की खानी, परिजन जग जंजाला ॥
इनको तज आतम को भज ले, पाकर रत्नत्रय धन ॥8॥

भज मन! भज मन! .....

नहीं मुझे सुर शिव सुख वांछा, नहीं मुझे कुछ इच्छा ।
चरण शरण अपनी देकर के, दे दो जिनवर-दीक्षा ॥
'सुव्रत' धरकर पूजैं तुमको, मिले मुक्ति का दामन ॥9॥

भज मन! भज मन! .....

भज मन! भज मन! भज मन! विद्यागुरु को भज मन!

37. विद्या गुरु को भज ले !

भज ले! भज ले! भज ले! विद्यागुरु को भज ले!
अब तक तूने भव दुख पाया, अब तो उसको तज ले!
काल अनन्त निगोद बितायो, विकलत्रय को तरसे ।
और बने सुर पशु नारकी, मानव बनने हरसे ॥
अब पाने शुचि शिव परमातम, पन परिवर्तन तज ले ॥1॥

भज ले! भज ले!.....

भोग भोगने सबको पूजा, मिथ्यातम अपनाये ।
त्याग तपस्या खूब करी पर, सुख का लेश न पाये ॥
मानव जीवन व्यर्थ गंवाया, अब तो जिनमत भज ले ॥2॥

भज ले! भज ले!.....

राग-द्वेष की ज्वाला में हम, सदा जले सब प्राणी ।
कभी मरे बलहीन बनें हम, कभी करे मनमानी ॥
सब कुछ पर पर थोपा हमने, अब तो समता धर ले ॥3॥

भज ले! भज ले!.....

कभी स्वार्थ से अंध बने हम, मूर्ख मोह धर रोये ।
झूठा वैभव सुख पाने को, धर्म कर्म ना जोये ॥
आत्म संपदा पाने को अब, परमातम पद भज ले ॥4॥

भज ले! भज ले!.....

सद्गुरु सीख कभी न मानी, ना सत्संग किया है ।
आतम हित तो किया नहीं है, पर उपदेश दिया है ॥
अब तो समझो प्यारे चेतन, अबतो सुव्रत धर ले ॥5॥
भज ले! भज ले!.....
मात-पिता जग को निज माना, अपनी संपद खोई ।
इसीलिए भव भव में आतम, दुख पाकर के रोई ॥
अब परमातम सुख पाने को, घर परिवारे तज ले ॥6॥
भज ले! भज ले!.....
कभी शक्ति पा की मनमानी, कभी दीन बन रोये ।
कभी ज्ञान पा जग भटकाये, कभी मूढ़ बन सोये ॥
अब तो जग जा प्यारे चेतन, समता रसको चख ले ॥7॥
भज ले! भज ले!.....

38. प्रार्थना

हे! विद्यागुरुवर तुमसे, मेरा मनवा रहे ना दूर, मेरा...
करो कृपा गुरु ऐसी, हम सबका दुख हो दूर ।
हम सबका...
सूर्यकिरण अरु चन्द्र चांदनी, रवि शशि बिन क्या रह पाये ?
नदी वृक्ष पर्वत झरने सब, क्या धरती बिन रह पायें ?
ऐसे जीवन मेरा, तुम पद से, रहे न दूर - तुम पद से ...
नन्हा शिशु बिन माता के ज्यों, जल बिन मीन रहे कैंसे ?
नदियां सागर से मिलने को, मिले वच्छ गौ से जैसे ।
मैं बालक नन्हा सा, कैसे रह सकता दूर ।कैसे .....
तुम बिन मैं दर दर भटका हूँ, हर पल ठोकर है खायी,
सहे कष्ट दुख भी पाया है, लेकिन मंजिल ना पायी ।
मुझको अब सत्पथ दे दो, नहीं रखना निज से दूर ॥नही...
नाली का जल बन जाऊँगा, या फिर नगरों का कचरा,
बन ना जाऊँ तुम बिन ऐसा, जिससे हर जन को खतरा ।
दूर मुझे जाने को, गुरु करना ना मजबूर । ..... गुरु...
रहूँ तुम्हारे साथ गुरुवर, तुम जैसा बन जाऊँ मैं,
मोह मान अघ तम सब हर कर, सदाचार को ध्याऊँ मैं ।
'सुव्रत' धरकर पाऊँ मैं, मुक्ति महल सुख पूर ... मुक्ति..
हम भक्तों ने तुम्हें पुकारा, मान तुम्हें पालन हारा,
रखो लाज हम सबकी गुरुवर, दे दो अपना शुभ द्वारा ।
सुखी सभी हो जायें, करके कर्मों को चूर.. करके कर्मों ...

39. विद्यागुरु की वाणी

विद्यागुरु की वाणी अमृत, झर-झर झरती जाये ।
भव्य जीव इस जग के सारे, इसको शीश झुकाये ॥
ज्ञान हिमालय से यह निकली, सबको बड़ी सुहाती ।
गाँव गाँव घर घर शहरों में, गीता धर्म सुनाती ।
जग कल्याणी इसकी धारा, सभी जगह बह जाये । ... विद्या...
कितने प्राणी इससे सँभले, करके पान इसी का,
जिसने इसको धार लिया है, हो कल्याण उसी का ।
इसको जिसने छोड़ दिया है, वे मुक्ती ना पाये । ... विद्या..
दुख कष्टों को हरने वाली, सत्पथ देने वाली ।
जग का जो अज्ञान अँधेरा, उसको हरने वाली ॥
ज्ञान रोशनी देकर ये ही, मंजिल तक पहुंचाये... विद्या...
स्याद्वाद और अनेकान्त का, इसका स्वाद निराला,
दस धर्मों की लहरें इसमें, प्रभु मुख उद्‌गम शाला ॥
प्रेम अहिंसा करुणा वाली, सबको पार लगाये... विद्या...
भेद भाव भी ना करती ये, सब पर समता धारे ।
दीन दुखी राजा चक्रीसम, शत्रु मित्र परिवारे ॥
हिंसा चोरी झूठ परिग्रह, और कुशील नशाये ... विद्या...
सब गतियों का भ्रमण रोकती, पंचम गति दिलवाती ।
कल्पवृक्ष चिंतामणि सी ये, पूरण आश कराती ॥
सकल जगत का सार बताती, इष्ट वस्तु दिलवाये ... विद्या...
शुभ मंगल गुरु वाणी हमको, अचल अमर पद देती ।
श्रेष्ठ शरण आश्रय दात्री यह, अटकन सब हर लेती ॥
सबसे उत्तम जग में है यह 'सुव्रत' शिव दिलवाये । ... विद्या..

40. णमोकार महामन्त्र

णमोकार सा मन्त्र जगत में, कोई नहिं उपकारक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥
मनवांछित फल का दाता यह, सबका भाग्य विधाता है।
पाप कर्म का बन्धन तोड़े, जीवन स्वर्ग बनाता है॥
सबकी बिगड़ी यही बनाये, दुख कष्टों का नाशक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥ 1॥
सुख साधना का मूल मन्त्र यह, यही मोक्ष का पन्थ रहा।
जन्म जरा मृत रोग नशाने, श्रद्धा का आधार कहा॥
मोक्ष महल सुख यही दिलाये, मोह अँधेरा घातक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥ 2॥
कोई आपत्ती आये या, दुख कष्टों ने घेरा हो।
या सबने मुख मोड़ लिया जब, चारों ओर अँधेरा हो॥
सब जीवों का यही सहारा, दिशा प्रदायक रक्षक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥ 3॥
पाँचों परमेष्ठी का वन्दन, इसी मन्त्र से हो जाये।
इसका वन्दन करते करते अपना क्रन्दन खो जाये॥
चारों गति का चक्कर रोके, पंचम गति का दायक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥ 4॥
अब तक जितने सिद्ध बने या, यश सुख सम्पद पाये हैं।
इसी मन्त्र का लिया सहारा, इसको ही बस ध्याये हैं॥
मन-वच-तन से इसको ध्याओ, मन्त्र यही हितकारक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥ 5॥

इसकी महिमा अगम निराली, सब कुछ देने वाली है।
भव संताप नशाकर जल्दी, दे सुखकर हरियाली है॥
देव शास्त्र गुरु ऐसा कहते, यही एक बस नायक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥ 6॥
देव इन्द्र राजा मुनिगण सब, सादर इसको ध्याते हैं।
इसकी महिमा गाकर सारे, जीवन धन्य बनाते हैं॥
सम्यक् दर्शन-ज्ञान दिलाये, 'सुव्रत' का भी पालक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥ 7॥
णमोकार सा मन्त्र जगत में, कोई नहिं हितकारक है।
इसकी पूजा वैभव देती, ध्यान जाप भवतारक है॥

41. विद्यावन्दना

जय जय विद्यागुरु गुणगान-ज्ञान-ध्यान तप मंगलधाम ॥
मल्लप्पा श्रीमति के नन्दन,
करते हम अभिनन्दन वन्दन ।
भव दुख क्रन्दन, सबका हर लो,
हे जग पूजित गुरु भगवान ॥ .....जय जय....(1)
मैं इस जग में सदा अकेला,
झूठा है दुनियाँ का मेला ।
हमको अपना भक्त बनाकर,
शरण दीजिए करुणावान ॥ .....जय जय....(2)
जय का अघ अज्ञान हटा दो,
और पाप का राज्य नशा दो ।
दया धर्म का पाठ पढ़ाकर,
ज्ञान दीजिए कृपा निधान ॥ .....जय जय....(3)
श्रद्धा के आधार हमारे,
'सुव्रत' के गुरु पालनहारे ।
मंजिल की शुभ राह दिखाकर,
हमें बना दो तुम भगवान ॥ .....जय जय....(4)
जय जय विद्यागुरु गुणवान .....

42. हे शान्तिदूत

हे शान्ति दूत! हे शान्ति दूत! हम तेरा वन्दन करते हैं ।
हे दया धर्म के रखवाले!, तेरा अभिनन्दन करते हैं ॥
हे! उपकारी जग हितकारी, शुचि संयम पथ देने वाले ।
हे! वैरागी निज अनुरागी, हे! पाप तिमिर हरने वाले ॥
हे! ज्ञान दिवाकर नाथ तुम्हें, हम सब कुछ अर्पण करते हैं ।
हे शान्ति दूत!.....
हे! तीर्थोद्धारक देव गुणी, हे! तीर्थ निर्माता पथ दाता ।
हे! दीन दुखी के करुणाकर, हे! नाथ अनाथों के त्राता ॥
हे! संत शिरोमणि जग पालक, हम तुम पद में बस नमते हैं ।
हे शान्ति दूत!.....
हे! भव बन्धन हरने वाले, हे! जग क्रन्दन हरने वाले ।
हे! जग भूषण हे! जग दर्पण, हे! जिनभाषण करने वाले ॥
हे! तारणतरण जिनेश ऋषि, तेरा आमन्त्रण करते हैं ।
हे शान्ति दूत!.....
हे! श्रमण श्रेष्ठ हे! अनगारी, हे! पूर्वाचार्यानुगामी ।
हे! कुन्दकुन्द के लघुनन्दन, हे! महावीर पथअनुगामी ॥
हे! धर्म ध्वजा के कर्णधार, हम क्षण-क्षण तुमको जपते हैं ।
हे शान्ति दूत!.....
हे! ज्ञानी, ध्यानी शिवगामी, हे! चतुर्संघ के गुरु नामी ।
हे! ज्ञान सिन्धु के शिष्य गुरु, हे! पालक 'सुव्रत' के स्वामी ॥
हे! नग्न दिगम्बर आचारज, तुम दर्शन से दुख नशते हैं ।
हे शान्ति दूत! हे शान्ति दूत! हम तेरा वन्दन करते हैं ।
हे दया धर्म के रखवाले!, तेरा अभिनन्दन करते हैं ॥

43. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

(विद्यागुरु को नमस्कार)

दोहा :- विद्यागुरु के दर्श से, भव दुख का हो अन्त ।
पाप तिमिर के नाश को, जग में गुरु भगवन्त ॥

चौपाई (16,16)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते,
विद्यागुरु आचार्य नमस्ते ॥
सन्तों के तुम सन्त नमस्ते,
भक्तों के भगवन्त नमस्ते ॥
ज्ञान सिन्धु के शिष्य नमस्ते,
शिष्यों के गुरुदेव नमस्ते ।
आचारज भगवान नमस्ते,
साधुमुनि महाराज नमस्ते ॥2॥
मल्लपा के वीर नमस्ते,
माँ श्रीमति के लाल नमस्ते ।
ग्राम सदलगा जन्म नमस्ते,
कर्नाटक के सन्त नमस्ते ॥3॥
ज्ञानी के तुम ज्ञान नमस्ते,
ध्यानी के तुम ध्यान नमस्ते ।
योगी के योगीश नमस्ते,
जग के तुम जगदीश नमस्ते ॥4॥

संयम के शुभ द्वार नमस्ते,
चर्या के करतार नमस्ते ।
संयम के शुभ द्वार नमस्ते,
शिवपथ के दातार नमस्ते ॥5॥

पाप तिमिर के सूर्य नमस्ते,
त्याग तपस्या तीर्थ नमस्ते ।
जिनवाणी के लाल नमस्ते,
जय-जय दीन दयाल नमस्ते ॥6॥

जीव दया के ईश नमस्ते,
धर्म अहिंसा रूप नमस्ते।
प्राणों के संतोष नमस्ते,
जय-जय जग के तिलक नमस्ते ॥7॥

तीर्थों के करतार नमस्ते,
तीर्थोद्धारक देव नमस्ते ।
जैन धर्म की शान नमस्ते,
तीर्थंकर सम जान नमस्ते ॥8॥

सुबह नमस्ते शाम नमस्ते,
जीवन में अविराम नमस्ते ।
गुरु को बारम्बार नमस्ते,
पाने को शिवधाम नमस्ते ॥9॥

नयनों में गुरुदेव विराजो,
मेरे हिय में आन विराजो ।
सुख शान्ति का मार्ग दिखा दो,
मुक्ति महल की राह दिखा दो ॥1॥

कानों से श्रुत पान करूँ मैं,
वाणी से गुणगान करूँ मैं ।
हिय से गुरु का ध्यान करूँ मैं,
प्रतिपल गुरु सम्मान करूँ मैं ॥11॥

विद्यागुरु के गुण मैं गाऊँ,
विद्यागुरु जैसा बन जाऊँ ।
'सुव्रत' धरकर चलता जाऊँ,
मुक्ति रमा को मैं भी पाऊँ ॥12॥

दोहा- विद्यागुरु के चरण में, माथ रहे दिन रात ।
भक्ति पूजा भी करूँ, करूँ गुणों की बात ॥

44. इतना साहस हमें देना भगवन्

(लय :- इतनी शक्ति हमें देना दाता)

इतना साहस हमें देना भगवन्, श्रद्धा टूटे कभी न हमारी,
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ॥ (स्थायी पद)
चाहे सुख का खिला हो बगीचा, अथवा दुख के हों बादल घनेरे ।
चाहे अमृत का सागर भरा हो, अथवा दुख के मरुस्थल के डेरे ॥
तो भी फूलूँ कभी न सुखों में, ना ही दुख का पड़े जोर भारी ।
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ॥ इतना...
पाके धन सम्पदा ज्ञान कुर्सी, हम ना आतंक को अब मचायें ।
होके बलहीन निर्धन विचारे, ना ही लालच नहीं क्रोध लायें ॥
देखें सपने कभी न महल के, सूखी रोटी लगे घर की प्यारी ।
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ॥ इतना...
चाहे छाया मिले ठण्डी-ठण्डी, या हो गर्मी कड़ी धूप तपती ।
चाहे काँटे गड़े कीच पत्थर, अथवा मखमल मिले फूल धरती ॥
तो भी मंजिल को बढ़ते चलें हम, छोडें मोडें न 'सुव्रत' की पारी ।
सहके तूफान कर्मों की आँधी, भूलूँ पूजा कभी न तुम्हारी ॥ इतनी...
इतना साहस हमें देना भगवन्
श्रद्धा टूटे कभी न हमारी ।

45. विद्यागुरु ज्ञाता

(लय :- जय पारस, जय पारस, जय पारस, देवा...)

परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता ।
तुमरे पिता मल्लप्पा श्रीमति माता ॥ (..मूल पद..)
मात-पिता बन्धु तजे बने तुम विरागी ।
ज्ञान सिन्धु गुरु खोज बने मोक्ष राही ॥
ज्ञान ध्यान तप करो, मोक्ष मार्ग दाता ।
परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता ॥
रुपया पैसा कुछ न रखो, सबका करो मंगल ।
हाथ पिछी कमण्डल है, घूमने को जंगल ॥
मान मोह ममता त्याग, साम्य भाव धाता ।
परमगुरु विद्यागुरु विद्यागुरु ज्ञाता ॥
यात्री को तीर्थ दिये, पात्री को शिक्षा ।
भटकों को राह दिये, भव्यों को दीक्षा ॥
मेरी खाली झोली भरो, विद्या ज्ञान दाता ।
परमगुरु विद्यागुरु विद्यागुरु ज्ञाता ॥
करें भक्त अर्चना आरती उतारते ।
भक्तों के ईश तुम, भव्यों को तारते ॥
'सुव्रत' की विनय सुनो, कृपा करो नाथा ।
परमगुरु, विद्यागुरु, विद्यागुरु ज्ञाता ॥
तुमरे पिता मल्लप्पा, श्रीमति माता ॥ परम गुरु.....

46. विद्यासागर - गाड़ी

(लय :- विद्यासागर गंगा, मन....)

विद्यासागर - गाड़ी, शिवपुर को जाती है ।
जिनको शिवपुर जाना, यह उन्हें बिठाती है ॥ (.. मूलपद..)
बनके ज्ञानसागर से, शिवसागर भी जाती ।
फिर वीर- शान्ति होकर, भगवन् सन्मति पाती ॥
यह चारों धामों के, तीरथ करवाती है ।
विद्यासागर गाड़ी .....
यम संयम की पटरी, व्रत नियम रहे टेशन ।
वैराग्य भरा ईंधन, जिन-आगम का इन्जन ॥
गुरु शिष्य रहे डिब्बे, दस धर्म बताती है ।
विद्यासागर गाड़ी .....
जिनरूप रहा सिगनल, सीटी तप ज्ञान मयी ।
सीटें शम दया मयीं, यात्री हैं भव्य सभी ॥
चालक विद्यागुरुवर, खुद चले चलाती है ।
विद्यासागर गाड़ी .....
इसका है टिकिट खरा, दुर्लभ सम्यक् - दर्शन ।
परीषह उपसर्ग मयी, रत्नत्रय आरक्षण ॥
जल्दी कर लो भैया, यह फिर ना आती है ।
विद्यासागर गाड़ी .....
सुन 'सुव्रत' टिकिट बिना, जो घर में वैरागी ।
क्रोधी लोभी भोगी, या भोजन के स्वादी ॥
इसमें वे ना बैठें, चेतावनी देती है ।
विद्यासागर - गाड़ी, शिवपुर को जाती है ॥
जिनको शिवपुर जाना, यह उन्हें बिठाती है ।विद्यासागर....

47. गुरुवर के संगै को रै है

(लय :- मिल है ना, मिल है ना, नर भव कौ हीरा जो मिल है ना)

को रै है, को रै है - गुरुवर के संगे को रै है । (.. मूल पद..)
पाँचों पापों खौं जो तज है,-2
और पाँच व्रत जो लै है.. जो लै है.. गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है ...
तीन मकार व्यसन सब तज है,-2
होटल में जो नैं जै है... नैं जै है.. गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
घर दारा बन्धु खौं तज कैं,-2
नगन दिगम्बर जो रै है... जो रै है ... गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
धन दौलत कुर्सी तज दैं हैं,-2
पिछी कमण्डल जो लै है... जो लै है...गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
केशलौंच कर है उपवासा,-2
पैदल-पैदल जो जै है... जो जै है... गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
अन्तराय पालै भोजन में,-2
ठाडें ठाडें जो खै है.. जो खै है... गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
रूखो-सूखो जो मिल जावै,-2
एकई बिरियाँ जो खै है.. जो खै है... गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
दाँत धोय नैं, नहीं नहावै,-2
सबई परीषह जो सै है.. जो सै है... गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
गद्दा पल्ली मखमल तज कैं,-2
काठ तखत पै सो जै है... सो जै है... गुरुवर के संगै वो रै है॥ को रै है .....
कबऊँ लडै नैं गाली देवै,-2

मीठौ – मीठौ कम बोलै – कम बोलै ... गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
ठण्डी गर्मी वर्षा सै है,–2
अपने में थिर जो रै है.. जो रै है.. गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
समता–रस खाँ खूबई चीखै,–2
ममता माया तज दै है.. तज दै है... गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
ज्ञान ध्यान तप में रत रै है,–2
भोग–विषय सब तज दै है... तज दै है... गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
दुखियों की सेवा जो कर है,–2
निंदा चुगली नै कर है... नैं कर है... गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
अपने सब आवश्यक पालै,–2
सबई बुराई तज दै है... तज दै है... गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
मौन रहे आतम खौं ध्यावे,–2
सबई परीग्रह तज दै है... तज दै है... गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
देव शास्त्र गुरुओं खौं पूजै,–2
वीतराग की जय बोलै.. जय बोलै.. गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
पूजन पाठ करै गुण गावै,–2
णमोकार–माला दै है.. माला दै है.. गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
वसुधा खौं मानै परिवारा,–2
मंगल–मंगल कर दै है .. कर दै है.. गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
जियो और जीने दो सबको,–2
धर्म अहिंसा जो लै है.. जो लै है.. गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....
दया धरम खौं नैं विसरावै,–2
'सुव्रत' घर कैं जय बोलै.. जय बोलै.. गुरुवर के संगै वो रै है ॥ को रै है .....

48. बड़े बाबा का भजन

(लय – जीवन है पानी की बूंद...)

कुण्डलपुर के तीरथ कर हम पुण्य कमाये रे ।
बाबा के दर्शन.. हो.. हो.. बाबा के दर्शन,
कर मौज मनाये रे ।
बाबा कुण्डलपुर वाले, आदिनाथ अतिशय वाले ।
सबके पूज्य बड़े बाबा, पद्मासन प्रतिमा वाले ॥
बाबा की मूरत .. हो .. हो.. बाबा की मूरत,
सबको मन भाये रे..।कुण्डल..
बड़े दिनों की अभिलाषा, दर्शन को है मन प्यासा ।
दर्शन वन्दन पूजन से, हो जाये पूरी आशा ॥
बाबा के चरणा .. हो.. हो.. बाबा के चरणा,
मन शुद्ध बनाये रे..।..कुण्डल..
तुम दुनियाँ की शान रहे, भक्तों के भगवान् रहे ।
श्रद्धा के आधार तुम्ही, तारणतरण महान् रहे ॥
ज्ञाता जिन दाता.. हाँ..हाँ.. ज्ञाता हो दाता..
भव पार लगाये रे ।.. कुण्डल..
जिसने भी जय–जय बोली, कर्मों की जलती होली ।
आप हमारे दुख हरके, भर देना सुख से झोली ॥
कोई ना अपना ...हो .. हो... कोई न अपना ।
सब लगे पराये रे ।.. कुण्डलपुर ..
बार–बार हम आयेंगे, गीत आपके गायेंगे ।
तुम हो मंजिल 'सुव्रत' की, सबको यही बतायेंगे ॥
चरणों की पूजा .. हो .. हो.. चरणों की पूजा..,
हम रोज रचाये रे ।.. कुण्डलपुर..

49. सच्चा रस्ता हमें देना गुरुवर

(लय :- इतनी शक्ति हमें देना दाता)

सच्चा रस्ता हमें देना गुरुवर, छोड़े संसार के मार्ग सारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गायें सदा गुण तुम्हारे ॥ (स्थायी पद)
क्या है जीवन हमारा गुरु बिन? जैसे माता बिन लाल कोई ।
जैसें पंखो बिना कोई पंछी, अथवा प्राणों बिना देह होई ॥
पाके किरपा खिलें फूल से हम, शीघ्र सुरभित करें द्वार सारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गाएं सदा गुण तुम्हारे ॥1॥
सच्चा रास्ता...
पायें मन पै विजय पाप छोड़ें, और संयम की बगिया सजायें ।
मुश्किलों से कभी न डरें हम, ज्ञान–ज्योति से हम जगमगायें ॥
कालापन हम उदासी का नाशें, दीप रोशन करें मन के सारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गाऐं सदा गुण तुम्हारे ॥2॥
सच्चा रास्ता...
फैली गर्मी निराशा की जग में, देके आशा की ठण्डक हरेंगे ।
फूल मुरझा गये जो समय के, दे के सहयोग हर्षित करेंगे ॥
करके हरियाली खुशियों की छाया, नाशें गम के मरुस्थल के द्वारे ।
बन के बालक दया धर्म पालें, और गाऐं सदा गुण तुम्हारे ॥3॥
सच्चा रास्ता...

ना बनें कंस रावण से कोई, ना झूठे दगाबाज दुश्मन ।
हम बने राम या वीर जैसे, अथवा विद्या गुरुवर के सज्जन ॥
करके सेवा बने श्रेष्ठ सच्चे, गीत गाये मधुर कष्टहारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गायें सदा गुण तुम्हारे ॥4॥
सच्चा रास्ता...
पथ जो हमको तुम्हीं ने दिखाया, उस पै चलने की शक्ति भी देना ।
चलके पायें सफलता विजय को, ऐसा वरदान भी हमको देना ॥
भूलें भटकेकभी न जगत में, पाये 'सुव्रत' भवों के किनारे ।
बनके बालक दया धर्म पालें, और गाऐं सदा गुण तुम्हारे ॥5॥
सच्चा रास्ता...

न कविता न कलाम लिखना है,
न गज़ल न पैगाम लिखना है।
बस एक आखिरी तमन्ना है मेरी,
गुरुवर के चरणों में अपना नाम लिखना है॥

50. किस्मत सँवर गयी

(लय :– कैसे धरे मन धीरा रे ! तीनों भैय्या निकर गये ।)
कुटिया में मुनिवर पधारे रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ॥ध्रुवपद॥ (कुटिया=नगरी)
कब सैं अखियाँ, मुनि खौं निहारें, मुनि खौं निहारें, गुरु खौं पुकारें ।–2
अब आऔ, शुभ अवसर रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ॥1॥कुटिया में ..
पड़गाहन कर चरणा पखारे, चरणा पखारे, दे दय अहारे ।–2
करकैं नवधा भक्ति रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ॥2॥कुटिया में ..
एक प्रार्थना जा सुन लइयौ, सुन कैं पूरी भी कर दईयौ ।–2
बार – बार गुरु अइयौ रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ॥3॥कुटिया में ..
मोय तुमारे, संगै रैनें, संगै रैनें, दीक्षा लैंने ।
दै दइयौ अपनी शरणा रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ॥4॥कुटिया में ..
'सुव्रत' के तुम गुरुवर स्वामी, गुरुवर स्वामी, जग कल्याणी ।–2
कर दइयौ मुस्का कैं किरपा रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ॥5॥कुटिया में ..
कुटिया में मुनिवर पधारे रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ।
हाँ.. हाँ.. रे ! मोरी किस्मत सँवर गयी ॥

51. अष्टाह्निका पर्व

महापर्व अष्टाह्निक आया, अष्ट कर्म के हरने को ।
नियम धरम से रहकर चलिए, मन्दिर पूजन करने को ॥ (ध्रुवपद)
कार्तिक फाल्गुन अषाढ़–मासी,
तीन बार यह पर्व मिले ।
शुक्ल अष्टमी से पूनम तक,
आठ दिवस यह सदा चले ॥
ब्रह्मचर्य धर पाप तजो सब, दुखी जगत से तरने को ॥1॥नियम..
द्वीप महा नन्दीश्वर अष्टम्,
सिद्ध जिनालय अकृत्रिम ।
वहाँ देव परिवार सहित जा,
भाव सहित करते पूजन ॥
यहाँ थापकर हम सब पूजैं, सिद्ध–सिद्धप्रभु बनने को ॥2॥नियम..
अब तक लौकिक पर्व मनाये,
तन मन धन अर्पित करके ।
पर जो चाहा, वो ना पाये, (मुक्ति)
पाये दुख हमने मरके ॥
इस जीवन में यह अपनाओ, जन्म मरण दुख हरने को ॥3॥नियम..
जिसने भी यह पर्व मनाया,
शीघ्र हुआ कल्याण यहाँ ।
या फिर जग में जहाँ रहे वह,
सुख वैभव वो पाय वहाँ ।
सुख कल्याण जिसे है प्यारा, भज 'सुव्रत' धर सपने को ।
नियम धरम से रहकर चलिए, मन्दिर पूजन करने को ॥4॥

52. जिनवाणी - स्तुति

(शुद्धगीता छन्द-लय-दयाकार दान भक्ति का)

दयाकर ज्ञान तत्त्वों का, हमें दो भारती माता ।
तिमिर अज्ञान पापों का, हरो जिन सरस्वती माता ॥ .. मूलपद..
कही अर्हन्त देवों ने, वही है पूज्य जिनवाणी ।
रही है अंग बारह की, रचे गणधर महाज्ञानी ॥
हरें मन के अँधेरे हम, हमें श्रुत दीप दो माता ।तिमिर .....
यही पैनी रही छैनी, जुदा जिय कर्म करती है ।
हरे भव ताप दुख जड़ता, यही सुख शान्ति करती है ॥
हमारी दूर भटकन हो, दिला दो राह जिनमाता ।तिमिर .....
रहे हम बाल अज्ञानी, नहीं कोई हमारा है ।
शरण आये तुम्हारी माँ, यही साँचा सहारा है ॥
भुलाकर भूल 'सुव्रत' की, हमें दो भारती माता ।
दयाकर ज्ञान तत्त्वों का, हमें दो भारती माता ॥तिमिर ...

दोहा

तत्त्व पदारथ द्रव्य का, जिनवाणी दे ज्ञान ।
जग कल्याणी मात को, बारम्बार प्रणाम ॥1॥
माँ जिनवाणी जो भजे, पाले उसकी बात ।
पहले सुख दोनों मिले, बाद मोक्ष मिल जात ॥2॥

(ज्ञानोदय)

आगम पढ़ने में यदि हमसे, अक्षर मात्रा पद स्वर कीं ।
व्यंजन संधी रेफ आदि की, हुईं हो कमियाँ जो कुछ भी ॥
उन कमियों को अनदेखा कर, क्षमा करें सज्जन हम को ।
क्योंकि शास्त्र सागर अनन्त है, जिसमें मूर्च्छित कौन न हो ॥

53. गुरुदेव नाम है प्यारा

गुरुदेव नाम है प्यारा
है सबका यही सहारा
श्री गुरुदेव की करो अर्चना, खुले मोक्ष का द्वारा ॥
नमें श्री गुरुदेव को, भजें श्री गुरुदेव को, जपें श्री गुरुदेव को ।
गहें श्री गुरुदेव को, सदा ध्यावे ऽऽऽ श्री गुरुदेव को ॥गुरुदेव नाम है...
मन मन्दिर में आओ, भगवन् सम बस जाओ ।
हम शरणा रहे विद्यागुरुकी, तुम हमको मोक्ष दिलाओ ॥गुरुदेव नाम है...

चरण नहीं,
आचरण हुआ तो
शरण मिले।

धर्म पगड़ी
सा नहीं, चमड़ी सा
होना चाहिए।

54. चातुर्मास अष्टक (गीत)

आयी रे धर्मो की वर्षा, यात्रा यही विकास की।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

कैसे जीवन हमने पाया, कैसे रहना क्या करना ?
जीवन का क्या लक्ष्य हमारा, कैसे जीना या मरना ?
इन सबका विज्ञान मिलेगा, पाओ दिशा प्रकाश की।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

कितने जीवन गुजर गये पर, सुधरे नहीं हमारे भाग्य।
हमें मिला है फिर से मौका, जाग सके तो प्यारे जाग॥
फिर पछताये क्या होगा जब, आये कथा विनाश की।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

करो समागम गुरु मुनियों का, करवा लेना चातुर्मास।
चातुर्मास अगर ना हो तो, सेवा करो बनो जिनदास॥
समय समय की कीमत समझो, करनी हो अभ्यास की।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

रत्नों में ज्यों हीरा उत्तम, चन्दन प्यारा वृक्षों में।
जीवन में मानव जीवन है, दया धरम त्यों धर्मों में॥

वैसे एक बरस में समझो, कीमत चातुर्मास की।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

वर्षा में पर्यूषण उत्सव, दस धर्मो वाली धारा।
जिनको अपनाकर जीवों का, हो जाता है उद्धारा॥
सो इनको अपनाओ भक्तो, जय - जय वर्षावास की।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

जगह जगह जल की वर्षा से, बहुत जीव पैदा होते।
और व्यर्थ चलने फिरने से, मरते या दुख से रोते॥
सो करुणा वाले सब साधक, धारे चातुर्मास ही।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

करें साधना बने तपस्वी, सब साधक इस मौसम में।
अपनी आतम पावन करके, रहते अपनी आतम में॥
'सुव्रत' धरकर महिमा गाओ, मिलकर मोक्ष निवास की।
आओ ! आओ! तुम्हें बतायें, महिमा चार्तुमास की॥
पालो दया धर्म ....

55. बुन्देली भजन

(लय :-नाचें जो मन को मोर रे...)

मिल कैं करों जय-जयकार रे ।-2
भक्तों के भगवन् गुरुवर पधारे, मिल कैं करौ जय जयकार रे ॥-2
कर-करकैं हिंसा पापों खौं, दुखी दुखी है संसारी ।
कौनउ साथी सग्गो नइयाँ, स्वारथ की दुनियाँदारी ॥
आदत तौ अपनी सुधार रे- आदत तौ अपनी सुधार रे ..
गुरुवर की अर्चा में चर्चा जा हो रई .. आदत तौ अपनी..
मिल कैं करौ जय-जयकार रे..
कबऊँ कबऊँ तो बड्डे बनके, दुनियाँ भर पै राज करौं ।
और बने जब सबसै नन्नें, दुनियाँ कौ डर खाय गयौ ॥
जीवों पै करुणा तौ धार रे .. जीवों पै करुणा तो धार रे ।
गुरुवर की चर्या में करुणा झलक रइ .. जीवों पैं करुणा तो ॥
मिल कैं करौ जय-जयकार रे..
इतै उतै तो कब सैं फिर रय, भटक-भटक मारे - मारे ।
अब तौ गुरु के चरण पखारौ, हो जायें वारे-वारे ॥
किस्मत तौ अपनी सँवार रे.. किस्मत तौ अपनी सँवार रे ।
मिल कैं करौ जय-जयकार रे..
करें गुलामी काया की हम, तीर्थ करें सब मनमाने ।
दुनियाँ की तौ खबर रखैं पै, फिरै खुदइ सैं अनजाने ॥

56. हम गुरु विद्या पाय शरण को

हम गुरु विद्या पाय शरण को,
नहीं जन्म की खुशियाँ अब तो, नहीं रहो भय जरा मरण को।
हम गुरु विद्या पाय शरण को।।.....

1.
अघ अज्ञान तिमिर को नाशूँ, और हँरू सब भरम को।
धार धर्म को निज को ध्याऊँ, नाशूँ वसु विध करम को।1।
हम गुरु विद्या पाय शरण को।।.....

2.
सभी कुमार्गों को मैं त्यांगू, और तजूं भव भ्रमण को।
जग वैभव संपद को तजकर, पाऊँ आतम रतन को।2।
हम गुरु विद्या पाय शरण को।।.....

3.
जिनको पूजैं सुरपति नरपति, अपने दुख के हरण को।
उन गुरुवर को मैं भी ध्याऊँ, भव संताप मेटन को।3।
हम गुरु विद्या पाय शरण को।।.....

4.
जग में रहना दुख का कारण, तभी तजूँ जग शरण को
दुख नाशक है शिव सुखदायक, गहूँ वही गुरुचरण को।4।
हम गुरु विद्या पाय शरण को।।.....

5.
मैंने निज को जाना समझा, पाकर तारणतरण को
'सुव्रत' धरकर पूजें उनको, मुक्ति रमा के वरण को।5।
हम गुरु विद्या पाय शरण को।।.....

57. मंदिर गीत

(लय :- दुनियाँ में गुरु हजारों है विद्यासागर का क्या कहना ..)

दुनियाँ में मन्दिर लाखों हैं पर, जिन-मन्दिर का क्या कहना ?
जिनके भगवन् का क्या कहना ? जिनकी महिमा का क्या कहना ॥
दुनियाँ में मन्दिर...

गगन चूमते शिखर रहे हैं, सुन्दर मोहक कलश रहे ।
केशरिया झण्डा लहराये तो, जिन द्वारे का क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर...

घण्टे टन-टन कर बाजें, परिकम्मा में सब जन नाँचें ।
गर्भालय वेदी मनहारी, फिर प्रातिहार्य का क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर...

जिनमें पर्वत सा सिंहासन, जिन पर श्री जी का है आसन ।
जिनके दर्शन है सुखकारी, फिर जिन पूजन का क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर...

तीरथ अतिशय है बड़े - बड़े, हैं सिद्ध क्षेत्र भी खड़े - खड़े ।
आगम जिनवाणी कल्याणी, मुनि गुरुओं का भी क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर...

शुभ दान दया सुख का द्वारा, जिनधर्म समझना है प्यारा ।
'सुव्रत' धरकर जिनवर पूजा, खुद का जिन बनना क्या कहना ?
दुनियाँ में मन्दिर...

58. गुरुवन्दना

ये गुरुवर हैं दुनियाँ में तीरथ महान् ।
गुरुवर की छाया है भगवत् समान् ॥
तीर्थंकर जैसा है इनका स्वरूप ।[2]
कहलाते हैं तीनों जग के ये भूप ॥[2]
वाणी में करुणाजल चर्या में ज्ञान ।[2] गुरु की...

रहते निरम्बर फकीरों के ताज ।[2]
मुस्का के करते हैं हर दिल पै राज ॥[2]
आतम के रसिया के उपकारी काम ।[2] गुरु की...
जितने सफल सिद्ध बनते महान ।[2]
उन सब ने पाया है गुरुवर से ज्ञान ॥[2]
गुरु बिन हमारा फिर कैसे कल्याण ।[2] गुरु की ...

भक्तों को मुँह माँगा देते वरदान ।[2]
गुरु की कृपा पाके बनते सब काम ॥[2]
शब्दों से कैसे हो गुरुमहिमा गान ।[2] गुरु की ..
हम सब को न दौलत-यश की तलाश ।[2]
नहीं चाहिए गाड़ी बँगला बिंदास ॥[2]
आँखों में मूरत हो होठों पै नाम ।[2] गुरु की...

59. फैशन पर बुन्देली व्यंग्य

(ज्ञानोदय छन्द)

आज काल के मौंडा मौंड़ी, फैशन करबे मर रय हैं ।
डींगें हाँकें राजा सी पैं, निन्ने भूखे फिर रय हैं ॥ (मूल पद)
पटियें पारें इतर लगायें, उन्ना फैशन के भाई ।
पैर पनैयें ऐसे मटकें, जैसे कुसकी करहाई ॥
काम-धाम कच्छू नँई करने, नौनौ खावे मर-रय हैं ।डींगें ...
हात-पाँव में दम नइयाँ पै, बातें तीर तमंचन की ।
आत जात कच्छू है नइयाँ, गैल ताक रय मंचन की ॥
खींसा में कौड़ी नइयाँ पै, आँगे होवे मर रय हैं ।ड़ीगें ...
गौ-धन गज-धन बैंच बिगाड़ें, करै कबाड़ौ धरमन को ।
देश और घर मन्दर जैसों, कर डारौ सब घूरन सौ ॥
बाप मतारी बेघर करकैं, कुत्ता बिल्ली रख रय हैं ।ड़ींगें ...
मन्दर जावै फुरसत नईयाँ, रोज सिलैमां खौं जावें ।
सड़ौ गलौ होटल कौ भावै, घर की रोटी नैं खावैं ॥
दूध मठा इमरत सौ तज कैं, परदेशी विष पी रय हैं ।ड़ीगें ...
नाँव धराबै जै परदेशी, ज्ञान विदेशी गाड़ी है ।
चाल ढाल दौलत परदेशी, टोप विदेशी दाड़ी है ॥
तनक घाम में कुमला जावैं, सूरज पावै मय रय हैं ।ड़ीगें ...
हीरो हीरोइन की फोटू, देखो घर घर लटक रयी ।
जान उने आदर्श सही के, जो पीढ़ी तो भटक गयी ॥

कैत अन्ध विश्वास धरम खौं, देख खुदइ का कर रय हैं ।ड़ीगें...
देशी खेल खेलवौ भूले, नचवौ गावौ भूल गये ।
सो मोरी भारत मैया के, सपने सारे बिसग गये ॥
देखौ तौ जै वीर सिपाही, काय गुलामी कर रय हैं ।ड़ींगें ...
कही कोइ की मानत नइयाँ, अपनी-अपनी बात करैं ।
अण्डा शाकाहारी कैबैं, मांसाहारी दूध कहैं ॥
परदेशी बैहर में देखो, देशी झण्डा बै रय है ।ड़ींगे...
आव कन्हैया राम पधारौ, महावीर झट्टइँ आओ ।
भारत खौं गारत बनवै सैं, मिलकैं सबई बचा जाओ ॥
सोन चिरैया फक-फक रो रइ, कहाँ सबइ जन खो गय हैं ।ड़ींगें ...
फैशन करबे वारे जग में, शहंशाह से पुज रय हैं ।
इनखौं बागी कै बै वारे, गजक सरीखे कुट रय हैं ॥
पढ़े लिखे तौ ढ़ोर चरारय, अनपढ़ देश चला रय हैं ।ड़ींगें ...
बाप मतारी गुरुजनों की, और जरूरत मन्दों की ।
सेवा करबे जिया चुराबें, जा हालत इन बन्दों की ॥
नइ पीढ़ी फैशन सैं मर रइ, सब टैन्शन से मर रय हैं ।ड़ींगें ...
मौड़ा मौड़ी की फैशन अब, डुकरा डुकरी भी कर रय ।
ये फैशन के चक्कर में सब, रोगी हो कैं ही फिर रय ॥
नैं दौड़ो ये अन्ध दौड़ में, जो दौड़े वे गिर रय है ।ड़ींगें...
हात पाँव मौं दांत टूट जैं, फूट खपरिया खुल जै है ।
सुनो ! समय के पैंलैं भैया, तन माटी में मिल जै है ॥

एक तनक सी चिनगारी सैं, धाँय-धाँय घर बर रय हैं । ड़ींगें...
गैल बताबौ काम हमारौ, चलबौ काम तुमारौ है ।
देखो मानौ या नैं मानौं, कै बौ काम हमारौ है ॥
बुरइ करइ कैंसउ नैं मानौं, जो देखी सो कै रय हैं । ड़ींगें...
देशी पर्व मनावौ भूले, भूले भाई चारे खौं।
फैशन के चक्कर में भूले, हम अपने गलियारे खौं ॥
अपनी सुध 'सुव्रत' लै लइयौ, बात पते की कै रय हैं । ड़ींगें ...

मोरी मैया नै नौ मइँना, मोय कोख में धर पालौ।
करकैं बार-बार पैदा फिर, दुनियाँदारी में डारौ॥
मिले पुण्य सैं गुरुवर नैं फिर, दइ शरणा अपनी छइयाँ।
गुरुवर के गुण का गावै हम, परैं मूड़ धर कैं पइयाँ॥

निंदा उसी की
जो जिंदा हो, मुर्दों की
मात्र तारीफ

60. एकत्व गीत

कोई नहीं किसी का अपना,
ये दुनियाँ तो बस इक सपना ।
सपने से क्यों प्रीत बढ़ाते,
सपना होता कब अपना ॥
चढ़ी दुफरिया में ज्यों लगता, दूर मरुस्थल में जल सा ।
दौड़े भागे हिरणा लेकिन, मिले न जल मरता प्यासा ॥
पता नहीं कब प्यास बुझेगी-2, पता नही कब तक तपना । कोई नहीं...
मरघट में हमने मुर्दों को, मान रखा दिल का टुकड़ा ।
गर कोई जिन्दा होता तो, रो लेते अपना दुखड़ा ॥
हुआ एक ना मुर्दा जिन्दा -2, हम ही गये उनमें दफना । कोई नहीं...
अपनों की तो भीड़ लगी पर, शामिल हैं सब ख्वाबों में ।
घाव मसालों से भर दे पर, मलते न मरहम घावों में ॥
गम की सरिता कल-कल बहती-2, इसमें अकेले ही बहना । कोई नहीं...

जो तैयारी में
फैल वो फैल होने
की, तैयारी में

61. भजन

(लयः दया कर...)

दया कर दान शान्ति का, हमें दो आप हे ! स्वामी ।
हमारी दूर भ्रान्ति हो, हमें सद्ज्ञान दो स्वामी ॥ दया कर ...

हमें संसार में लगती, सदा ही शान्ति हो जैसे ।-2
जलाती आग भोगों की, नयी फिर क्रान्ति हो कैसे ॥-2
तुम्हारे द्वार में आके, हमें मिलती खुशी स्वामी । दया कर ...

सहारा भक्ति का लेकर, हमें भी गीत गाना है ।-2
तुम्हारी देख कर मूरत, हमें भी मुस्कुराना है ॥-2
कृपा होवे कभी कम ना, यही है प्रार्थना स्वामी । दया कर ...

तजें संसार के नाते, रुलाते जो अंधेरा दें ।-2
जलायें भक्ति की ज्योति, अहो 'सुव्रत' सबेरा दें ॥-2
दशहरे हो हमारे दिन, दिवाली रात हो स्वामी । दया कर...

मुक्तक- मूंदों ना आँखे भगवान को देख के ।
चढ़ाओं ना द्रव्य कही पर भी फेंक के॥
शासन नही आत्मानुशासन सीखो साथियों।
इस तरह न भागो अपना सिर टेक के॥

62. जिनदर्शन स्तुति

(ज्ञानोदय)

डूब-डूब भवसागर में हम, खूब-खूब भवक्षार पिये ।
ऊब-ऊब भवसागर से अब, ढूढ़-ढूढ़ प्रभुद्वार लिए ॥
देख-देख जिनवर मुद्रा को, रोम-रोम पुलकित होता ।
झूम-झूम के गद्गद् होकर, खुशी-खुशी तन मन रोता ॥ 1॥
अहो! अहो! यह माथ धन्य है, प्रभु चरणों में झुक-झुक के ।
धन्य-धन्य ये हाथ हमारे, भक्ति भाव से जुड़-जुड़ के ॥
सफल-सफल ये नयन हुये हैं, झर-झर बहते झुके-झुके ।
दिव्य दिव्य ध्वनि सुने कान कब, आश-आश में रुके-रुके ॥ 2॥
भव दुख नाशक भव दुख नाशक, श्वाँस-श्वाँस में बस जाओ ।
आओ ! आओ! जिनवर आओ, और-और ना तड़पाओ ॥
धाँय-धाँय भव की ज्वाला पर, रिम-झिम रिम-झिम बरस पड़ो ।
पाप-गजों पर पाप- गजों पर, सिंह-सिंह बन गरज पड़ो ॥ 3॥
जन्म-जन्म की पीड़ा हर लो, मरण, मरण का करवा दो ।
अन्ध-अन्ध भव फन्द हरण को, दीप-दीप झट जलवा दो ॥
कली - कली मन की खिल जाए, भली-भली शिव राह मिले ।
कू-कू कोयल जैसे बोले, धूँ-धूँ होली पाप जले ॥ 4॥
न्यारी-न्यारी जिनमुद्रा की, भक्ति-भक्ति कर जाप करें ।
चट-चट कर्म चटकते जिससे, झर-झर अपने आप झरें ॥
वर वरदान यही 'विद्या' दो, व्रत-व्रत 'सुव्रत' हो जायें ।
जय जयवन्त रहे जिनशासन, शान्ति-शान्ति हम सब पायें ॥ 5॥

वीतराग जिनरूप का, दर्शन सुख का द्वार।
परम सत्य यह लोक में, जिसकी जय जयकार॥

63. निरम्बर हैं

निरम्बर हैं, दिगम्बर हैं, खुदा हैं।
हमारे सद्गुरु जग से, जुदा हैं।।
सभी दुनियाँ इन्हीं की है दीवानी। -2
बहारें सब इन्हीं पर तो फिदा हैं।।
अदावत ना मुहब्बत ना किसी से।-2
जरा हट के सभी इनकी अदा हैं।।
नहीं कुछ भी इन्हें लेना न देना।-2
अमीरी से गरीबी से जुदा हैं।।
नहीं है ख्बाव ना कोई तमन्ना।-2
गमों में भी, खुशी में भी मुदा हैं।।
निरम्बर हैं, दिगम्बर हैं, खुदा हैं।
हमारे सदगुरु जग से, जुदा हैं।।

64. मढ़िया जी भजन

(लय :- तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण)

आओ मिलकर चले, मढ़िया जी को चलें, तीरथ प्यारा।
पाँचों पापों से पायें किनारा।
दर्शन वन्दन करें, पूजन अर्चन करें, भक्ति-द्वारा।
सारे पुण्यों का ये ही सहारा।

1.

खूब ऊँचा गिरि मढ़िया जी का, जिसके आगे लगे लोक फीका।
जिस पर मन्दिर बने, ऊँचे-ऊँचे घने, जिनवर द्वारा।.....
पाँचों.....

2.

देश परदेश से भक्त आते, भाव भक्ति से माथा झुकाते।
आपद उनकी टली, संपद उनकी मिली, संकट द्वारा।.....
पाँचों.....

3.

हम भी आये यहाँ तीर्थ करने, अपने आतम की सम्पत्ति वरने।
तीरथ सारे भजे, 'सुव्रत' धरकर गहे-शिव सुख सारा
पाँचों.....

65. नन्दीश्वर द्वीप जिन आरति

सहज बने सब सिद्ध जिनों की, हो ऽऽऽऽ
सहज बने सब सिद्ध जिनों की, जिन प्रतिमा भगवान की।]–2
आओ जगमग करें आरती, नन्दीश्वर जिनधाम की।
नन्दीश्वर जिनधाम की।।

1.

नन्दीश्वर की एक दिशा में, अन्जन गिरिवर इक जानो।]–2
दधिमुख चार, आठ रतिकर पर, इक इक है जिनगृह मानो।।
तेरह मन्दिर एक दिशा में, हो ऽऽऽ
तेरह मन्दिर एक दिशा में, कुल बावन जिनधाम जी।
आओ जगमग.....।

2.

कार्तिक फाल्गुन आषाढ़ी के, अष्टाह्निक पर्वों में जा।]–2
सभी देव परिवार सहित ही, करें महोत्सव नच गा–गा।।
पंचमेरू सह करें अर्चना हो ऽऽऽ
पंचमेरू सह करें अर्चना, अष्टम द्वीप महान की।
आओ.....

3.

वन्दित अर्चित इन्द्र सुरों से, जिन मन्दिर वे पूज्य सभी।]–2
जिनकी महिमा हम गायें तो, क्यो होगें हैरान कभी।
मंगलकारी 'सुव्रत'–दायी, हो ऽऽऽ
मंगलकारी 'सुव्रत' –दायी, जिनवर कृपा निधान जी।
आओ जगमग करे आरती, नन्दीश्वर जिन धाम की।
नन्दीश्वर जिन धाम की।

66. ये महफिल न होती

ये महफिल न होती नजारे न होते।
अगर ये गुरुवर हमारे न होते।।
सूरज तुम्हीं से तो सीखे चमकना।
चन्दा ने सीखा है तुम से बिखरना।।
ये झिलमिल गगन मे सितारे न होते।
अगर ये गुरुवर.....
रत्नों की खेती समुन्दर न करते ।
कि झरनों से कल–कल ये गाने न झरते।।
कि नदियों के कोई किनारे न होते।
अगर ये गुरुवर.....
दीपों की ज्योति तो झिलमिल तुम्हीं से।
फूलों की खुशबू तो महके तुम्हीं से।।
ये मौसम के खुश – खुश इशारे न होते।
अगर ये गुरुवर.....
मजहब पै श्रृद्धा न विश्वास होता।
न ईश्वर का कोई कभी दास होता।।
कि गम में हमारे सहारे न होते
अगर ये गुरुवर.....

67. जीवन रेल

(हरिगीतिकाछन्द/लय : नवदेवताओं की सदाजो.....)

गाड़ी चली गाड़ी चली दो, चाक की छुक-छुक चली।
बनती कभी ये मेल है तो, ये कभी रुक-रुक चली।।

1.

सबसे अजब चलती निराली, चाल इसकी अटपटी।
चलती चलाती सब जगह पर, क्या पहाड़ी तलहटी।।
दायें कभी बायें कभी नीचे कभी ऊपर चली।
रफ्तार इसकी तेज है सो, हर गली में ये चली।.....गाड़ी...

2.

यह रेलगाड़ी जिन्दगी की, नाम जीवन मेल है।
इसमें करें दुनियाँ सवारी कर्म का बस खेल है।।
तन नाम के डिब्बों बहुत से, एक दूजे से जुडें।
आगे कभी पीछे कभी तो, बगल में सटकर जुड़े।.....गाड़ी...

3

ईंधन भरा है मौत वाला, श्वांस का इंजन चले।
सुख और दुख पटरी उसी पर, रेल जीवन की चले।।
है एक यात्री आत्मा जो, एक डिब्बे में चढ़ा।
जो झांकता है खोल खिड़की तो कभी बैठा खड़ा।....गाड़ी..

4.

आरम्भ होकर जन्म से ये, दौड़ती झण्डी हिला।
पहला पड़ा टेशन इसी का नाम बचपन चुलबुला।।
पाये खिलौने खेल खेले तो मुसाफिर हँस पड़ा।
टूटे खिलौने खेल छूटे, तो दुखी वह रो पड़ा।।.....गाड़ी.....

5.

बोली सुनाकर तोतली सी, खेल नटखट छूछिली।
रोने रुलाने हास्य में फिर, रेल आगे बढ़ चली।।
फिर दूसरा टेशन जवानी, शीघ्रता से आ गया।
गाड़ी रुकी प्यासा मुसाफिर, उतर कर नीचे गया...गाड़ी.

6.

तब दूसरा प्यासा मुसाफिर, प्लेटफारम पर मिला।
दोनों मिले मिलकर चले फिर, बढ़ चला यह सिलसिला।।
थोड़ी चली गाड़ी बढ़ी तो, और इक यात्री चढ़ा।
नन्हा निराला साथ आया, शोर फिर थोड़ा बढ़ा।।

7.

आश्चर्य में फिर रेल दौड़ी शोर जिससे फिर बढ़ा।
चौथा मुसाफिर नेक नन्हा, साथ में आकर खड़ा।
यो रंगरलियों में सरक कर, रेल आगे बढ़ चली।।
फिर देखते ही देखते में, खेल अटपट गढ़ चली।।

8.

आगे बढ़ी आगे बढ़ी फिर, रेल आगे को बढ़ी।
अब तो नहीं एक्सप्रेस है ये, रेल अब रुक-रुक बढ़ी।।
टेशन बुढ़ापा है वही तो, मैल माटी से सना।
कोई नहीं है चाहता इस, पर जरा भी ठहरना।।

9.

जाला लगा है लोचनों पर, नाक से नाला बहे।
देता नहीं कुछ भी सुनाई, बड़बड़ाता ही रहे।।
यो चाल चलता लड़खड़ाके, कमर टूटी झुक गयी।
दो गाल पिचके चाँद चमके, पेट मुख खाई भयी।।

10.

यों अनमनी आगे बढ़ी तो इक बड़ा जंक्शन दिखा।
पहला मुसाफिर खोल खिड़की, झाँकता क्या है लिखा।।
बाहर लिखा शमशान पाया, तो पड़ा वह सोच में।
मुझको उतरना है यहीं पर, वह लगा यह बोलने।।

11.

हमको बदलना रेल है ये, दूर जाना अब हमें।
अब तो बिछुड़ना आप सबसे, छोड़ना ये सब हमें।।
जैसे सुना यह साथियों ने, तो सभी जन रो पड़े।
यों अलविदा कहके मुसाफिर, छोड़ गाड़ी चल पड़े।।

12.

ऐसी चली यह रेलगाड़ी, टेशनें बदले यही।
पर धर्म पटरी पर चले तो, मोक्ष पहुँचेगी यही।।
गाड़ी चलाओ धार सुव्रत, तो अचल टेशन मिले।
जिसको दिखे गुजरे जहां से, देख सबको सुख मिले।।

68. गुरु के चरणों को

गुरु के चरणों को जिन्होंने ध्या लिये।
प्रभु के चरणों को उन्होंने पा लिये।।
गुरु-बिना किसको मिली मुक्ति यहाँ।
गुरु-मिले सबको मिली युक्ति यहाँ।।
साँचे गुरु के गुण जिन्होंने गा लिये,
प्रभु के चरणों को.....

गुरु-अर्चा, सबसे बड़ी है अर्चना।
सब तीर्थों से बड़ी है गुरु-वन्दना।।
गुरु-श्रद्धा सुमन जिन्होंने खिला लिये,
प्रभु के चरणों को.....

भागोगे कब तक गुरु को छोड़ के।
सब कुछ तज नाता गुरु से जोड़ ले।।
गुरु-आज्ञा पर जो खुदा को चला लिये,
प्रभु के चरणों को.....

69. गुरु हमको दो साँची शिक्षा

(लय - मेरा रंग दे बसन्ती चोला.....)

गुरु हमको दो साँची शिक्षा, गुरु.....

1

जिस शिक्षा को लेकर आदि, पहुँचे मुक्ति धाम को।
जिसे धार कर वीरा भगवन, पाये केवलज्ञान को।।
वो ही शिक्षा हमको दे दो-2 जिसकी हमें प्रतीक्षा।।
गुरु हमको दो साँची.....

जिस शिक्षा से दीक्षा लेकर, मन मुण्डन करवा दो।
रत्नत्रय की राह चलाकर, मद खण्डन करवा दो।।
पद यात्री का राज बता दो-2 माँगें कर में भिक्षा।
गुरु हमको दो साँची.....

उस शिक्षा के ही अभाव में, दुखी-दुखी सब प्राणी।
उससे खुले द्वार 'सुव्रत' का, शिक्षा वो वरदानी।।
भाग्य सितारा उससे चमके-2 ऐसी अपनी इच्छा।
गुरु हमको दो साँची.....

70. अभिषेक गीत

(लय- जीवन है पानी की बूंद)

प्रासुक जल से जिनवर जी का, न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ-हाँ, कलशों से धारा।
सब रोज कराओ रे। प्रासुक.....

1.

ये अरहन्त जिनेश्वर हैं, परम पूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगत् पूज्य धर्मेश्वर हैं।।
कलशों के पहले, हाँ-हाँ, कलशों के पहले
सब शीश झुकाओ रे।। - प्रासुक.....

2.

देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों का अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले
बिम्बों की महिमा हाँ-हाँ बिम्बों की महिमा
सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक.....

3.

रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्ति-मय हम आये, प्रासुक लेकर नीर सही।।
ढारो रे, कलशा हाँ-हाँ ढारो रे, कलशा
सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक.....

4.

भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते।।
मौका ये पाके, हाँ-हाँ मौका ये पाके.....
सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक.....

5.

फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन-मन के अपने हर लो।।
झूमो रे नाचो हाँ-हाँ झूमो रे नाचो.....
जयकार लगाओ रे। प्रासुक.....

6.

प्रासुक जल की यह धारा समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा।।
धारा जल धारा, हाँ-हाँ, धारा जल धारा.....
सब करो कराओ रे। प्रासुक.....

प्रासुक जल से जिनवर जी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा, हाँ-हाँ, कलशों से धारा।।
सब रोज कराओ रे।

71. आये हैं गुरुवर

आये हैं गुरुवर झूम लो,ओ भक्तो!! झूम लो!!
पाये हैं तीरथ घूम लो,ओ भक्तो!! घूम लो।।]-2
नगरी में आये हैं भगवन बन के।
घट में समाये हैं आतम बन के।।
सपनों में आये हैं, झूम लो। ओ भक्तों !!
गुरु के चरणा चूम लो.....
दुनियाँ दीवानी है इनके ही नाम की।
सबकी तमन्ना है इनके ही धाम की।।]-2
गुरु दर्शन पाये हैं, झूम लो। ओ भक्तों !!
सिर पर गुरु पद धूल लो.....
बनी अयोध्या नगरी हमारी
आज लगें यूं ज्यों हो दीवाली।।]-2
हमको मिले हैं, राम पूज लो। ओ भक्तो !!
'सुव्रत' गुणों को खूब लो.....
आये हैं गुरुवर झूम लो, ओ भक्तो !! झूम लो.....

72. बिना दर्शन किये तेरे

बिना दर्शन किये तेरे, मेरा ये दिल तड़पता है।
झड़ी बरसात की जैसे, दुखी हो यूँ बरसता है।।
खिले हम फूल हैं ऐसे, खिले सूरजमुखी जैसे।
सरोवर का कमल कोई, खिले सूरज को पा जैसे।।
अरे मुरझा गया चेहरा, गुरुदर्शन से खिलता है।
झड़ी बरसात की जैसे.....
बिना पानी कोई मछली, कदाचित, जिन्दगी जीले।
बिना सांसे कोई इंसा, जहर के जाम भी पीले।।
मगर तेरे बिना कण-कण, मेरा जेहन बिखरता है।
झड़ी बरसात की जैसे.....
वो सूरज आसमां का भी, तुम्हारे दर्श को चमके।
सुनो ! चन्दन महावन का, तुम्हारे दर्श को महके।।
हर इक जर्रा जमीं का भी, तुम्हीं से ही संवरता है।
झड़ी बरसात की जैसे.....
तुम्हें न ख्याल है अपना, चलो कुछ हम बता देते।
जमाने में रहे क्या तुम, कर हम बन्दिगी सुना देते।।
खुदा भी दर्श को तेरे, बड़ा बेबस तरसता है।
झड़ी बरसात की जैसे.....

73. ये पापों के काम

(लय :- ये कागज की नाव)

ये पापों के काम, तेरे कब तक चलेंगें।
ये कभी न कभी तो माटी में मिलेंगें।।
ये सत्ता ये शक्ति ये भोगों की मस्ती।
तुझे लूट लेगी तेरी ही अपनी हस्ती।।
ये हिंसा के फूल, तेरे कब तक खिलेंगें।
ये कभी.....।

2.

यह साथी संगाती, ये दुनिया की माया।
नहीं साथ देगी तेरी ही प्यारी काया।।
ये महलों के ख्वाव, तेरे कब तक टिकेंगें।
ये कभी.....।

3.

गीत गुरुवर के गाले प्रीत प्रभु से लगाले।
ये फिर ना मिलेंगे हितैषी धर्म वाले।।
ये नाटक ये खेल तेरे कब तक फलेंगे।
ये कभी न कभी तो माटी ये मिलेंगें।।
ये पापों के काम.....

74. धीरे धीरे, सद्गुरु को

धीरे-धीरे, सद्गुरु को, खोज लेता आदमी,
अपनी श्रद्धा के मुताबिक-2
धीरे-धीरे सद्गुरु को, पूज लेता आदमी।।
घूम कर सारे जहां में-2 फिर गुरु से-
धीरे-धीरे, नाता अपना, जोड़ लेता आदमी,
धीरे-धीरे.....
जानकर सारी हकीकत-2, फिर गुरु की-
धीरे-धीरे, खुद चुनरिया, ओढ़ लेता आदमी।।
धीरे-धीरे.....
देखकर संसार दुख को-2, फिर गुरु से-
धीरे-धीरे, बात साँची, बूझ लेता आदमी।।
धीरे-धीरे.....
छोड़कर शिकवे गिले सब-2, फिर गुरु सा-
धीरे-धीरे, आत्मा का, मौज लेता आदमी।।
धीरे-धीरे.....
मानकर खुद को खुदा सा-2, फिर गुरु से-
धीरे-धीरे मुक्ति का घर, खोज लेता आदमी।।
धीरे धीरे, सद्गुरु को, खोज लेता आदमी।

75. हे विद्यागुरुवर!

(लय : हे भारती माँ.....)

हे विद्यागुरुवर ! हे विद्यागुरुवर !
शरणा तुम्हारी है सुख का समुन्दर।।

(1)

सबसे है ऊँचा गुरु नाम प्यारा।
जो भी जपे तो मिले भव-किनारा।
हम भी तो आके, गुरु-नाम ध्या के,
मन को बनाये मुक्ति कामन्दिर।।

हे विद्यागुरुवर.....

(2)

गुरु-नाम विद्या गुरु-ज्ञान विद्या।
गुरु-पाद पूजा टरे सब अविद्या।।
लहरें बहा के, हमको जगा के,
पावन बना के भरो ज्ञान अन्दर।।
हे विद्यागुरुवर.....

(3)

धरती गगन में सारे चमन में।
गुरुवर समाये हैं भक्तों के मन में।।
हर पर्व तुमसे, हर धर्म तुमसे,
रोशन हुए सारे जग के मंजर।।
हे विद्यागुरुवर.....
हे विद्यागुरुवर ! हे विद्यागुरुवर !
शरणा तुम्हारी है सुख का समुन्दर।।

76. चौके में मुनि पड़गाएंगे

(लय - छोटा सा मन्दिर बनाएँगे)

चौके में मुनि पड़गाएँगे आहार कराएँगे।
आहार कराएँगे उत्सव मनाएँगे।

1.

भक्ति भाव से उच्चासन दें-2
मुनिवर को माथा झुकाएँगे-मुनि पड़गाएँगे।। चौके में.....

2.

प्रासुक जल कलशों में भरके-2
मुनिवर के चरणा धुलाएँगे-मुनि पड़गाएँगे।। चौके में.....

3.

थाली भर आठों द्रव्यों से-2
मुनिवर की पूजा रचाएँगे...मुनि पड़गाएँगे।। चौके में.....

4.

दे आहार नवधा भक्ति से-2
खुशी-खुशी गुण गाएंगे.....मुनि पड़गाएँगे।। चौके में.....

5.

मुनि से सुनकर धर्म कथा को-2
अपना पुण्य बढ़ाएँगे- मुनि पड़गाएँगे।। चौके में.....

6.

पुण्य बढ़ा के फिर मुनि बन के-2
मोक्षमहल हम जायेंगे-मुनि पड़गाएँगे।। चौके में.....

77. गुरु चरण गीत

गुरु के चरण धुला लो....गुरु के चरण धुला लो।
विद्यागुरु के चरण धुला के, अपना भाग्य जगा लो।।
गुरु के.....

1.

गुरु चरणों की धूल हमें तो, लगती चन्दन जैसी।
जिसको पाकर हो जाती है, आतम कुन्दन जैसी।।
गुरु चरणों को पाकर भक्तों-2, आओ हाथ लगा लो.....
गुरु के.....

2.

दुख दरिद्र संताप मिटाती, शान्ति सम्पदा लाती।
भवसागर में डूबी नैया, भव से पार कराती।।
गुरु चरणों की धूल कीमती-2, अपने शीश लगालो.....
गुरु के.....

3.

गुरु चरणों को छूकर जल भी, अमृत सा हो जाये।
चरणोदक से हम भक्तों का, भव कुन्दन खो जाये।।
चरणोदक श्रद्धा से लेकर-2, 'सुव्रत' कर्म नशा लो.....
गुरु के.....

78. रे मन! भज गुरु विद्या नाम।

रे मन! भज गुरु विद्या नाम।
जाके सुमरन से बन जाते, सबके बिगड़े काम।।

1.

जग पालक हितकारी गुरुवर, उपकारी निष्काम।
तारण तरण जहाज दिगम्बर, जप ले प्रभु का नाम।।1।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम.....

2.

लोकालोक प्रकाशी ज्ञाता, करें मुक्ति को काम।
मिथ्यातम को हरने वाले, ज्ञानदीप दें दान ।।2।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम.....

3.

राग द्वेष सब दोषों को तज, वीतराग पद धाम।
सभी संपदा क्षण नश्वर हैं, मुक्ति रमा शुचि नाम ।।3।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम.....

4.

रत्नत्रय शिवपथ दायक हैं, चरण शरण शिवधाम।
सो 'सुव्रत' शिव सुख पाने को, दिये धोक अविराम ।।4।।
रे मन ! भज गुरु विद्या नाम.....
रे मन! भज गुरु विद्या नाम।
जाके सुमरन से बन जाते, सबके बिगड़े काम।।

79. कदम कदम बढ़ाए जा

कदम-कदम बढ़ाए जा, गुरु के गीत गाए जा।
ये जिन्दगी है कीमती, तू धर्म पर लुटाए जा।।
कदम-कदम.....

1.

तेरे लिये जगत की भक्ति बेकरार है,
शिवालय की चोटियों को तेरा इन्तजार है।।
मुक्ति से दूर है मगर मुक्ति के गीत गाए जा।
कदम-कदम.....

2.

बड़ा कठिन समय है यह बड़े कठिन हैं रास्ते,
मगर ये मुश्किलें हैं, क्या मुनिवरों के वास्ते।
तू उपसर्ग से खेल, परीषहों में मुस्कुराए जा।।
कदम-कदम.....

3.

बिछुड़ रही है तुझसे तेरी काया तो बिछड़ने दे,
करुणा जीव की पले तो अपना सुख उजड़ने दे।
मिटा के एक देह तू, हजार तन बचाए जा।।
कदम-कदम.....

4.

तज के कुव्रतों को तू 'सुव्रतों' में मन लगा।
और भव भ्रमण को त्याग, मुक्ति को गले लगा।।
बन्धनों को तोड़ के निज आत्मा को पाए जा
कदम-कदम बढ़ाए जा.....

80. आज मुनि चौक में आये

आज मुनि चौके में आये।]-2
भक्तों के सौभाग्य जगाये।।
तीरथ पाये हर्ष मनाये-2-अरा, ररा, रा, रा.....रारा....रा,
आज मुनि.....

1.

नगन दिगम्बर मुद्रा धारे।]-2
पिछी कमण्डल हाथ सँभाले।।
तीर्थंकर से क्षेमंकर से-2.....अरा.....ररा.....रा....रा....
आज मुनि.....

2.

उच्चासन दे चरण धुलाये।]-2
गन्धोदक को शीश चढ़ाये।
पूजा गाये, शीश नवाये-2.....अरा.....ररा.....रा....रा...
आज मुनि.....

3.

खुशी-खुशी आहार दान दे।]-2
गुरुओं से कुछ धरम ज्ञान ले।।
भजन सुनाये पुण्य कमाये-2.....अरा.....ररा.....रा....रा...
आज मुनि.....

4.

आज ठिकाना न खुशियों का।]-2
दूर हुआ दुख हम दुखियों का।
फूल खिले है, रतन मिले है-2.....अरा.....ररा.....रा....रा....
आज मुनि.....।

5.

पर्व दशहरा साथ दीवाली।]-2
'सुव्रत' पाये सब खुशहाली।।
आई बहारें, भाग्य सँभारे-2.....अरा.....ररा.....रा....रा..
आज मुनि.....।

स्कूली ज्ञान को शिक्षा कहते हैं।
उसकी समाप्ति को परीक्षा कहते हैं।
कुछ न घटे बस मेरा संसार ही घट जाये।
संसार की समाप्ति को दीक्षा कहते हैं।

81. कुटिया में आना

कुटिया में आना कई बार बाबा।
करना हमारा उद्धार बाबा।। ध्रुवपद।।]–2
जैसे ही कुटिया में बाबा तुम आये।
मन झूमा भक्ति में गुण महिमा गाये।।
आँखों में बहती जल–धार बाबा।
खुशियों का आया त्यौहार बाबा।। कुटिया में.....

2.

सबरी को राम मिले राधा को श्याम मिले।
दुखिया सी चन्दना को वीरा भगवान मिले।।]–2
वैसे हम पाये उपहार बाबा।
भूले न तेरा उपकार बाबा। कुटिया में.....

3.

सबरी सा धीरज ना मीरा सी भक्ति
नगरी अयोध्या ना हनुमन सी शक्ति।।]–2
होगा न हमसे इन्तजार बाबा।
सुन लेना जल्दी पुकार बाबा।। कुटिया में.....

4.

तुम ही हो मंजिल, साधन भी तुम हो
तुम ही हो कारज कारण भी तुम हो।।]–2
तुम ही हो नैया पतवार बाबा।
पहुँचाना हमको भवपार बाबा।। कुटिया में.....

5.

हमने सुना तुमने सबको सँभाला।
जो भी शरण आये उनको है पाला।।]–2
हमको भी देखो एक बार बाबा।
खुलवा दो मुक्ति का द्वारा बाबा।। कुटिया में.....

82. मैं विद्यापद कब पाऊँगा

1.

मैं विद्यापद कब पाऊँगा?
छोड़ के सारे भव सागर को, गुरुवर के पद ध्याऊँगा।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ?.....

2.

मात पिता धन दौलत तज के, अपने को बस पाऊँगा।
सब संयोग वियोग नाश के, आतम रोग नशाऊँगा।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ?.....

3.

पाप तिमिर अज्ञान नाश के, सम्यक् श्रुत को पाऊँगा।
और धार सम्यक् चारित्रा, निज आतम को पाऊँगा।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ?.....

4.

छोड़ के सारे जग जंजाला, मुनि बन मुनि कहलाऊँगा।
और धार समता शिव चली, मुक्ति रमा को पाऊँगा।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ?.....

5.

कुव्रत दुखदायक सब तज के, शुचि 'सुव्रत' अपनाऊँगा।
फिर विद्यासागर पद धरकर, भव सागर तर जाऊँगा।।
मैं विद्यापद कब पाऊँगा ?.....

83. हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे

1.

हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे,
पर पद वन्द बहुत भव गुजरे, मिटे न भव के फन्दे।।

2.

कुगुरु कुदेव कुधर्म सुहाये, किये उन्ही सम धन्धे।
सो उन जैसे भव भव भटके, बन न पाये चंगे।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे.....

3.

यह आतम है अशुचि हमारी, तन मन सब कुछ गन्दे।
शुद्ध बने न अब तक हम तो, खाकर सबके डण्डे।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे.....

4.

स्वार्थ पूर्ति को सबको पूजा, क्या रागी क्या नंगे ?
स्वार्थ पूर्ण हुआ ना अभी तक किन्तु बने बेढंगे।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे.....

5.

रहे अव्रती व्रत ना धारे, विद्या गुरु ना वन्दे।
अब 'सुव्रत' धर कर मैं पूंजूँ पाने शिव आनन्दे।।
हमने कबहुँ न सद्गुरु वन्दे.....

84. हमारी प्रार्थना

कीजिए रक्षा हमारी, प्रार्थना यह न हमारी।
किन्तु आपद में डरें ना, प्रार्थना यह है हमारी।।
कष्ट दु:ख संताप से मन, त्रस्त जब होवे हमारा।
तो भले तुम सांत्वना दो, या नहीं दो पथ सहारा।।
और हम पर ध्यान तुम दो, प्रार्थना यह न हमारी।
किन्तु दुख सह लें सभी हम, प्रार्थना यह है हमारी।।
जब जरूरत हो तुम्हारी, तो मदद पाऊं न पाऊँ।
किन्तु बल टूटे न मेरा, धैर्य साहस न गवाऊँ।।
हर समय हम लाभ पायें, प्रार्थना यह न हमारी।
किन्तु सब नुकसान सह लें, प्रार्थना यह है हमारी।।
बोझ कम करने हमें तुम, दो नहीं दो सांत्वना रे।
किन्तु घबरा के न भागें, वहन कर लें भार सारे।।
तार दो हमको उबारो, प्रार्थना यह ना हमारी।
किन्तु बल दो तैरने का, प्रार्थना यह है हमारी।।
आपको सुख के दिनों में, नम्र बन भूलें कभी ना।
और जब दुख की निशायें, तो दुखी होयें कभी ना।।
नाथ! 'सुव्रत' साथ दो तुम, प्रार्थना यह ना हमारी।
किन्तु नित प्रभु नाम ध्यायें, प्रार्थना यह है हमारी।।

85. और मौत फिर भाग गयी

अस्त्र शस्त्र सब हथियारों को, जब से तुमने छोड़ दिया।
तब से आंधी तूफानों ने, देख तुम्हें रुख मोड़ लिया।
बाजा बजा दिगम्बरत्व तो, धराती अंबर गूंज उठे।
मानवता के खातिर देखो, सोयी आतम जाग गयी।।
और मौत फिर भाग गयी।।

धारा के अनुकूल चलें वे, जिनको खुद पर यकीं नहीं।
चल-चलकर प्रतिकूल देख लो, बाहें इनकी थकीं नहीं।।
अंगारों पर चलकर इनकी, आज तलक ना राख हुई।
कुन्दन जैसे चमक उठे ये, सोयी आतम जाग गयी।।
और मौत फिर भाग गयी।।

आँधी तूफानों में तुमने, दीप सुरक्षित जला रखा।
और गजों के झुण्ड-झुण्ड पर, तुमने अंकुश लगा रखा।।
शूलों में फूलों से महके, दिग्-दिग् खूब पराग गयी।
वज्रपात से कुछ ना बिगड़ा, सोयी आतम जाग गयी।।
और मौत फिर भाग गयी।।

छोले फोले तोड़ चुके दम, घबराते अब जाने से।
चन्दा सूरज पर्वत सागर, दिखते सब शर्माने से।।
सब उपमायें फीकी पड़ती, अनुपम आतम बाग यही।
रत्नों का भण्डार देख के, सोयी आतम जाग गयी।।
और मौत फिर भाग गयी ।। 4।।

सब डरते हैं सुनो! मौत से, तुमसे डरती मौत है।
दिगम्बरों की मस्ती 'सुव्रत' सुनो! मौत की सौत है।।
देख समर्पण मौत तुम्हारा, थर-थर डरकर काँप गयी।
रखे हाथ पर हाथ देखकर, सोयी आतम जाग गयी।।
और मौत फिर भाग गयी ।।5।।

86. अब विद्या गुरु नाम भजौ

अब विद्या गुरु नाम भजौ।

1.

श्रेष्ठ हितैषी गुरु को जानो, भव संसार तजौ।
सत्संगति अपना ले भाई, विषय भोग बरजौ।।1।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ.....

2.

गुरु के गुण अपने में धारो, अपने दोष तजौ।
आतम का श्रृंगार करो रे, तन श्रृंगार तजौ।।2।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ.....

3.

मन वच तन से गुरु गुण गाओ, शुचि गुरु पाद जजौ।
वीतरागता को तुम ध्याओ, सब मिथ्यात्व तजौ।।3।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ.....

4.

जीव दया करुणा को पालो, सारे पाप तजौ।
छोड़ के सारी जगत उपाधि, पद अध्यात्म भजौ।।4।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ.....

5.

कुव्रत दुखदा दुर्गति कारण, उनको शीघ्र तजौ।
माथ टेक 'सुव्रत' सुखदायक, गुरु सम शीघ्र मजौ।।5।।
अब विद्या गुरु नाम भजौ.....

87. विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे

विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे।

1.

भूल हमारी हमें सताये, छीने सभी सहारे रे।
भव-भव में हमको भटकाये, देवे कष्ट अपारे रे।।1।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे.....

2.

विद्या गुरु सम कोय न दूजा, किससे आस लगाये रे।
कौन भरेगा झोली खाली, सद्गुण कौन दिलाये रे।।2।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे.....

3.

अपना स्वार्थ सभी को प्यारा, जगत् फिकर न भाये रे।
सब जीवों के नित्य हितैषी, देव कहाँ से पाये रे।।3।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे.....

4.

दुख संकट में सब घबराते, सुख वैभव इठलाये रे।
ममता त्यागी समता धारी, संत कहाँ मिल पाये रे।।4।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे.....

5.

कहीं उपेक्षित कहीं अपेक्षित, करके जग भटकाये रे।
'सुव्रत' मुक्तिदायक गुरुवर, और कहाँ हम पाये रे।।5।।
विद्या गुरु तज जाँय कहाँ रे.....

88. महामन्त्र णमोकार

(लय-कुण्डलपुर की धूल)

मन से इनको ध्या ले बन्दे, वचनों से गा गीत।
हाथ जोड़ सिर टेक इसी को, ये है साँचा भीत।
सच्चा साथी सिद्धिदायी पालनहार है।
सबसे अच्छा महामन्त्र णमोकार है।।

1.

पहले पद में अरिहन्त घातिकर्म नाशी हैं।]-2
दूजे पद में सिद्ध प्रभु सिद्धालय के वासी हैं।।]
साँचा वन्दन भक्तों को भव तारणहार है।। सबसे अच्छा..

2.

शिक्षा दीक्षा दायी मुनि गुरु आचार्य हैं।]-2
शास्त्रों के पठन पाठी श्री उपाध्याय हैं।।]
साँची पूजा अर्चा सुख शान्तिकार है। सबसे अच्छा.....

3.

दुनियाँ में घूमते पर दुनियाँ से दूर हैं।]-2
आत्मा के ध्याता संत साधु सच्चे शूर हैं।।]
सर्व साधुओं को मेरा.....नमस्कार है।। सबसे अच्छा.

4.

महामन्त्र णमोकार पाँच पद धारी है।]-2
सब पापों का नाशनहारी पहला मंगलकारी है।]
सब मन्त्रों का मूलमन्त्र मुक्ति द्वार है।। सबसे अच्छा.....

5.

इसका ही ध्यान जगते सोते सुबह शाम हो।]-2
कानों से कहानी सुनो होठों पर ये नाम हो।।]
'सुव्रतसागर' की जीवन का विद्याहार है।। सबसे अच्छा..

89. गुरुवर तेरी प्यारी सी

(लय : गुरुवर तेरे चरणों की मुझे धूल.....)

गुरुवर तेरी प्यारी सी, मुस्कान जो मिल जाए।
सच मानो भक्तों को, शिवधाम ही मिल जाये।।

1.

भीषण गर्मी की-लू, बन जाए बसन्त बहार।
आँधी तूफाँ भूकम्प, सब बनते हैं त्यौहार।।
जीवन का गुलदस्ता, मुस्कान से सि़ल जाए।। गुरुवर.....

2.

रोगों की औषध ये, निर्बल का संबल है।
भटकों की रहा यही, राही की मंजिल है।।
इस प्रेम के धागे से, फटता दिल सिल जाए।। गुरुवर...

3.

जिनकों मुस्कान मिले, वे होते दास निहाल।
इस पूँजी को पाके, सब होते मालामाल।।
दीजै तोहफा अनमोल, शिव-कुँजी मिल जाए।। गुरुवर...

4.

हमने सारा संसार, देखा घूमा जाना।
पर नाथ आप जैसा, नहीं कोई भी माना।।
पाके तुमरी मुस्कान, मन मोर मचल जाए।। गुरुवर.....

5.

मुस्कान करे जादू, दिल का हल्का हो भार।
मन की गाँठें खोले, दे नयी दिशा आधार।।
है महामन्त्र मुस्कान, सब उलझन सुलझाए ।। गुरुवर.....

6.

अपनी मुस्कान के रंग, 'सुव्रत' रंग लीजै।
छोड़ो कंजूसी और, खुल के मुस्का दीजै।।
कुछ घटे न तेरा पर, हमको सब मिल जाए।। गुरुवर....

90. गुरु-विद्या बिन भव-भव रोये

गुरु विद्या बिन भव-भव रोये।

1.

खोकर निज आतम संपत्ति, पर के बिन हम रोये।
जग जन को आदर्श बनाकर, बीज पाप का बोये।।1।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये.....

2.

फूले हम पाकर सुख वैभव, दुख कष्टों में रोये।
मोहमान मद की मदिरा पी, चिर से अब तक सोये।।2।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये.....

3.

तन को हमने खूब सजाया, मन के मैल ना धोये।
अब तक हम तो कुछ न पाये, भार व्यर्थ में ढोये।।3।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये.....

4.

जीव दया करुणा ना पाली, हम से प्राणी रोये।
धर्म नहीं हमने धारा शुचि, शान्ति कहाँ से होये।।4।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये.....

5.

भव सागर में डूब गये हम, कुव्रत धर कर रोये।
अब 'सुव्रत' धर कर मैं ध्याऊं, मुक्ति रमा बस तोये।।5।।
गुरु विद्या बिन भव-भव रोये.....

91. गुरु ने हमारी नाव को

जय गुरु-जय गुरु गूँज से, गूँजे सारा लोक।
पाके खुदा सी हस्ती को, बन्दे दिए हैं ढोक।।
गुरु ने हमारी नाव को, धक्का लगा दिया।
माँझी सा बन के धार से, साहिल पै ला दिया।।

1.

लगता गुलाब जल मगर, भव-का विषैला नीर।
पीके रहेंगे स्वस्थ हम, किन्तु मिली है पीर।।
गुरु ने हमारे घाव पै, मरहम लगा दिया।। माँझी.....

2.

दीपक जला के प्रेम के, साँचे किये हैं ख्वाब।
करके बसेरा ख्याल में, महका दिए गुलाब।।
आशीष दे के प्रेम से, अपना बना लिया।। माँझी.....

3.

भक्ति का दे के आसरा, गाना सिखाते गीत।
मुस्का के गम के दौर में, हमको दिलाते जीत।।
आनन्द की फुहार से, नहला धुला दिया।। माँझी.....

4.

कानों में फूँके मन्त्र हैं, हृदय में डाली जान।
पर्दा हटा के दृष्टि को, सम्यक् दिया है ज्ञान।।
अपनी ही दे के सांसें, जीना सीखा दिया।। माँझी.....

92. हे गुरुवर! तेरी पिच्छी बनू मैं

हे गुरुवर! तेरी पिच्छी बनू मैं, तेरी पिच्छी...
हर पल तेरे साथ रहूं मैं। हर...

मोर पंख की प्यारी पिच्छी जीव-दया को पाले।
संयम का जिन चिह्न यही है, गुरुवर इसे सँभाले॥ -2
तू पिच्छी तेरा पंख बनू मैं, तेरा पंख...। हर...॥ हे गुरु...

जब भी गुरुवर करें क्रिया मैं, आगे पीछे डोलूँ। -2
हर पल गुरु के साथ रहूँ पर, मुख से कुछ न बोलूँ।
तू बोले तेरे काम करूँ मैं, तेरे काम...॥ हे गुरु...

जैसे पिच्छी को अपनाया, मुझको भी अपना लो।
भले-बुरे जैसे हैं 'सुव्रत', अपने पास बिठालो॥
तू गुरुवर, तेरा शिष्य रहूँ मैं, तेरा शिष्य...। हर... हे गुरु...
तू भगवन तेरा भक्त रहूँ मैं, तेरा भक्त...

94. ओ! विद्या गुरु जी

ओ! विद्या गुरु जी, आइओ मोरे गाँव।
इन्तजार में गुजरे उमरिया[2], कब मैं पखारूँ तेरे पाँव।
ओ!...
ऊँची नीची घाटी मिलेगी, कहीं पे चन्दन माटी मिलेगी।-2
कहीं चिलकती धूप मिलेगी-2, कहीं पे ठण्डी-2 छांव।
ओ!...
कब से पुकारे मोरी नगरिया, अनजानी सी हॉट बजरिया।-2
रंग बिरंगी दुनियाँ तज के-2, भूल न जइयो मोरो गाँव।
ओ!...
तुम्हें गाँव के मंदिर पुकारें, भक्तों के चौके चौक निहारें।-2
कहीं पे करियो आहार गुरुजी-2, कहीं धुला लइयो पाँव।
ओ!...
दिया और बाती, पूजा की थाली, बच्चे बड़े, भक्त और भक्ति।-2
'सुव्रत' को भी आशीष देके-2, दे दइयो अपनी छाँव

95. गुरु जी सदा हि हम पे कृपा बनाए रखना

गुरू जी सदा हि हम पे कृपा बनाए रखना।
जो रास्ता सही हो, उस पे चलाए रखना॥
कृपा बनाए रखना...
अपने शरीर का तुम, रखते खयाल जैसे,
सन्मार्ग दे हमें भी, तुमने सँभाला वैसे।
वात्सल्य माँ के जैसा, हमपे बनाए रखना
कृपा बनाए रखना...
जब से तिलक लगाया, सिर पर गुरु तुम्हारा।
सूरज से ज्यादा चमका, हमरे भाग्य का सितारा॥
छाया प्रसाद की तुम, हमपे बनाए रखना
कृपा बनाए रखना...
आँखों की ज्योति तुम हो, हो आत्मा हो धड़कन।
तुम ही हमरी पूजा, परमात्मा हो भगवन्।
संसार के हितैषी, आशीष बनाए रखना
कृपा बनाए रखना...
नहि स्वर्ग मोक्ष पाना, नहि रत्न फूल बनना।
गुरु के चरण-शरण की, हमको तो धूल बनना॥
निर्वाण रथ पै स्वामी, हमको बिठाए रखना।
कृपा बनाए रखना...
कभी भूलने लगें तो, आगाह करना हमको,
कभी डूबने लगें तो, आ थाम लेना हमको,
हमरी पतंग की तुम, डोरी थमाए रखना
कृपा बनाए रखना...

96. गुरु (प्रभु) दर्शन की मोह

गुरु (प्रभु) दर्शन की मोहे, लागी रे लगन।]
ए जी, लागी रे लगन॥]-2

गुरु (प्रभु) से दूरी सही न जाये,]
गुरु (प्रभु) बिन जीवन जिया न जाये]-2
गुरु (प्रभु) बिन संयम धर्म तपस्या-2 होगी रे भगन।-2
गुरु (प्रभु) दर्शन...

गुरु (प्रभु) ही मेरे रत्नत्रय हैं।]
तीर्थ वन्दना मोक्षालय हैं॥]
गुरु (प्रभु) ही मेरे शास्त्र मन्त्र हैं-2 सांचे हैं भजन।-2
गुरु (प्रभु)...

गुरु (प्रभु) पद ध्याके फिर क्या ध्याना]
गुरु (प्रभु) पद पाके फिर क्या पाना]-2
गुरु (प्रभु) ही मेरे प्राण जिंदगी-2, प्यारे हैं धरम।-2

मनो वचन तन अर्पण कर दें।]
आतम को परमातम कर लें॥]-2
'सुव्रत' की पूरी इच्छा हो-2, मुक्ति का यतन।-2

97. सारी दुनियाँ भुला दी तुम्हारे लिए

सारी दुनियाँ भुला दी तुम्हारे लिए,
गुरु (प्रभु) तुम ना भुलाना हमारे लिए।
प्राणों से प्यारे हमको आप हो,
प्राण सब कुछ नहीं हैं हमारे लिए॥
कष्ट दु:ख और गम सारे सह लेंगे हम,
कार्य जो भी बता दोगे कर लेंगे हम।
होंठ संतोष धर के भी जी लेंगे हम,
जैसे तैसे हो! कैसे भी जी लेंगे हम।
किन्तु धड़कन ने धड़कन से बोला यही
हम न धड़केंगे, गुरु बिन तुम्हारे लिए
सारी...
रात को रात ना दिन को दिन न गिना,
मन भी लगता नहीं हे गुरु! तुम बिना।
दूर हो कर मिला चैन क्षण भर नहीं।
पास आये तो देखा भी पल भर नहीं॥
फिर भी अन्दर से आवाज आयी यही-2,
गुरु भूले नहीं हैं हमारे लिये।
सारी...

हम तुम्हारे बिना दूर रह न सकें,
दूर जाने को मजबूर क्यों फिर करो।
पास आये तुम्हारे यही आश ले,
दूर तुम फासले शीघ्र अपने करो॥
दूर जाने का कहना कभी न गुरु-2,
और नजदीक करलो हमारे लिये।
सारी...
कोई 'सुव्रत' की इच्छा रही शेष न,
कोई अरमान न कोई सपना नहीं,
पाया सब कुछ मगर हाथ खाली रहे,
कोई भी न मिला तुम सा अपना नहीं॥
आप अपने हुये पूर्ण सपने हुये,
हम तुम्हारे हुये, तुम हमारे हुये।
और क्या चाहिए अब हमारे लिए...
सारी...

98. मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ

मैं तो कब से तेरे चरण पड़ूँ,
मुझे आचरण संस्कार दे।
जितने न तारे, तारे उतने,
मुझको भी पार उतार दे।
मैं तो कब से तेरे...

फरियाद करने मैं गया, हर द्वार में हर काल में।
जहाँ जो मिला उससे हुआ मैं तो दुखी हर हाल में॥
अब आपके चरणा पखारूँ-2, मुझे एक बार निहार ले। मैं...

मुझ में न बोध अबोध शिशु मैं, माँ का आँचल गोद तुम।
तेरे हवाले है जवानी, दो महात्मन् बोध तुम॥
आश्रय बुढ़ापे के तुम्ही बन-2, मेरी जिंदगी शृंगार दे। मैं...

बचपन बने श्री कृष्ण जैसा, बाल-क्रीड़ा चुलबुला।
यौवन बने श्री राम जैसा, मान-मर्यादा बँधा॥
महावीर जैसी हो समाधि-2, मेरा आत्मरूप निखार दे। मैं..

जो मैं चाहता वो ही करूँ पर वो मिले जो तू चाहता।
जो तू चाहता मैं वो करूँ तो, वो मिले जो मैं चाहता॥
ये तू-तू, मैं-मैं, मैं-मैं, तू-तू-2, मुझे इस कलह से उबार दे। मैं...

सब ध्यान शब्दों पर ही दे, पर समझें न आशय है क्या?
प्रभु आप तो आशय भी समझें,ध्यान न दो शब्द हैं क्या?
मेरी टूटी फूटी से ये किस्मत-2, तू अपने जैसी सँवार दे। मैं...

तेरा वास कण-कण में है लेकिन, ना मिले सपने में तू।
या तो अपनें वालों में रहे तू, या रहे अपने में तू॥
मैं तो आ गया चरणों में तेरे, तू भी झट मुझे स्वीकार ले। मैं...

दुर्लभ मगर कितने सहज हैं, रिश्ते मेरे व तेरे।
मैं तो तेरे चरणों में हूँ पर, तुम रहो दिल में मेरे॥
'सुव्रत' नमोस्तु तो कर चुके अब, तू भी आशीर्वाद दे। मैं...

मुक्तक-
मैं तो छोटा सा मुनि आया, आज आपकी बस्ती में,
जिनको सुनके खलल पड़ेगा, मस्तानों की मस्ती में।
लेकिन यदि तुम सवार होते विद्या गुरु की कश्ती में,
तो दावे से तुम्हें मिला हूँ, अरिहंतों की हस्ती में॥

99. गुरु तुम मिल गये

गुरु तुम मिल गये, सारी दुनियाँ मिले न तो क्या है।
मन सुमन खिल गये, सारी बगिया खिले न तो क्या है॥
मैं भक्त हूँ और भगवान तुम,
होंगे नहीं दूर मैं और तुम।
मेरे मन में तुम्हीं(हो तुम्हीं-3) मैं हूँ चरणों में तेरे तो क्या है॥
गुरु तुम मिल गये
तेरे ही चरणों की मैं धूल हूँ।
चरणों में अर्पित कोई फूल हूँ।
शरणा भी तो मिले(हो मिले-3) संग दुनिया चले न तो क्या है॥
गुरु तुम मिल गये
चरणों में तेरे जगह मिल गयी,
खुशियों की मुझको वजह मिल गयी।
सेवा भी तो मिले(हो मिले-3) प्रार्थना पूरी कर दो तो क्या है।
गुरु तुम मिल गये
भले प्राण 'सुव्रत' के लुट जायें पर।
तेरा साथ हो हाथ भी शीश पर।
बंदगी तो मिले, (हो मिले-3) जिंदगी फिर मिले न तो क्या है?
गुरु तुम मिल गये

100. ढलते-ढलते हुये ज्ञान के सूर्य ने

ढलते-ढलते हुये ज्ञान के सूर्य ने आत्म चिंतन किया एक दिन शाम को॥
मेरी ढल जाएगी जिंदगी तो यहाँ, कौन पूरा करेगा मेरे काम को॥
मोह से व्याप्त संसार के अंध में, ज्ञान की रश्मियाँ कौन फैलायेगा।
मेरी बुझती हुयी धर्म की ज्योति को, कौन आगे जलाता हुआ जायेगा॥
भोले भाले भले प्राणियों को यहाँ, कौन दर्शाएगा शांति के मार्ग को।
ढलते...
भोग विषयों में इस धर्म के पंथ पर, सूरमा साहसी कौन संयम धरे।
आस्था ज्ञान चारित्र के दीप से, रोशनी सत्य के रूप से भी करो॥
योग्य कोई नहीं राज किससे कहें, कौन समझे मनोभाव निष्काम को।
ढलते...
विद्याधर, ज्ञान के दूत बन आए तब, ज्ञान जैसा गुरु और कहाँ पाओगे।
विद्याधर नाम सुन गुरु ये बोले वचन, धर के विद्या मुझे छोड़ उड़ जाओगे।
गुरु के सुन के वचन विद्या ने ली कसम, अब सवारी का आजीवन त्याग
हो।
ढलते...
बात तो इतनी सी, त्याग इतना बड़ा, बस यही सोच के हाथ गुरु सिर रखे।
शिक्षा दीक्षा दे इच्छा के जल को जला, शिष्य के शिष्य बन शीशपद में रखे॥
निज अहं जब गले, तत्त्व अर्हम् बने, खोज करने चले मुक्ति के धाम को।
ढलते...
जाते जाते कहा कुलगुरु तुम बनो, संघ को भी गुरुकुल बना लेना तुम।
आप निर्ग्रंथ हो ग्रंथ में लीन हो, प्रवचन दे पर वचन न कभी देना तुम॥
पाठ अंतिम सिखा, ले ली अन्तिम विदा, ज्ञानोदय विद्योदय से अमर नाम हो।
ढलते...

101. श्रद्धा से बस याद करो तो

श्रद्धा से बस याद करो तो-दौड़े आयेंगे श्रीराम।
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो-निज घट में पाओगे राम।
[जिनवर राम-आतम राम]-4

सबरी ने जब याद किया तो, दौड़े-2 आये राम।
जिसके जूठे बैरों को खा, उसको तार दिये श्रीराम॥
सबरी जैसा करो समर्पण-2, तुमको भी तरेंगे राम।
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो-निज घर में पाओगे राम॥
[जिनवर राम-आतम राम]-4

दुखी अहिल्या की दर्दीली-सुनकर व्यथा पधारे राम।
चरण धूल से कुन्दन जैसी बनी अहिल्या तीरथ धाम॥
करो अहिल्या सा वन्दन तो-2, कुन्दन से चमकायें राम-
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो-निज घर में पाओगे राम।
[जिनवर राम-आतम राम]-4

राम-नाम की माला जपकर, प्रभु हनुमान पुकारे राम।
सीना चीर दिया तो घट में, प्रकट हुये श्री सीता राम॥
करो भरोसा हनुमन सा तो-2, अपने पास बुलायें राम-
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो-निज घर में पाओगे राम।
[जिनवर राम-आतम राम]-4

राम नहीं देखे 'सुव्रत' ने, ना लछमन सीता हनुमान।
नहीं अहिल्या सबरी देखी, ना देखे कोई भगवान॥
देखा है बस विद्या गुरु को-2, मिल गये सारे तीरथ धाम।
श्रद्धा की अखियाँ तो खोलो-निज घर में पाओगे राम।
[जिनवर राम-आतम राम]-4

102. हे गुरु! हमको तेरी कृपा चाहिए

(लय- जिस गली में तेरा घर ना.....)

हे गुरु! हमको तेरी कृपा चाहिए।
तेरे चरणों की धूलि जरा चाहिए॥
मीठी-वाणी से सबको जगाते हो तुम।
प्रेम करुणा की दौलत लुटाते हो तुम॥
हमको तेरा दुलार हर दफा चाहिए। हे गुरु...

बातों में आप हो श्वासों में आप हो।
आँखों में आप हो ख्वाबों में आप हो॥
हमको इसके सिवा और क्या चाहिए। हे गुरु...
तेरे चरणों की छाया में दोनों जहाँ।
छोड़कर तुमको हमको अब जाना कहाँ॥
तेरा आशीष तेरी दया चाहिए। हे गुरु...

माँ की ममता तुम्हीं, तुम ही बापू का प्यार।
तुम ही सांचे धरम, तुम ही मुक्ति के द्वार॥
हमको सान्निध्य तेरा सदा चाहिए। हे गुरु...
तेरी पलकें जिधर भी झुकें या उठें।
गिरने वाले तुरत ही सँभल कर उठें॥
छत्र-छाया में हमको शरण चाहिए। हे गुरु...

चाहे स्वर्गों का सुख या हो नरकों का गम।
हो खुशी जन्म की या हो मृत्यु का गम॥
हमको तेरा नज़ारा वफा चाहिए॥ हे गुरु...

103. सारी दुनियाँ जिनको कहती, विद्यासागर संत हैं

लयः (कुन्दकुन्द से दिगम्बर....)

सारी दुनियाँ जिनको कहती, विद्यासागर संत हैं।
मेरी श्रद्धा भक्ति कहती, विद्यागुरु भगवंत हैं॥

मैंने ना तीर्थंकर देखे, ना अरिहंत मिले।
वृषभ वीर आदिक चौबीसों, ना भगवंत मिले॥
भगवंतों अरिहंतों जैसे, विद्या गुरु निर्ग्रंथ हैं। मेरी.....

समवसरण ना देखा मैंने कैसा वो होगा।
गुरु का संघ देखकर लगता, ऐसा ही होगा॥
समवसरण के नायक जैसे विद्यागुरु अरिहंत हैं। मेरी.....

दिव्य देशना सुनी न मैंने, क्या होती होगी।
सुन के गुरु के प्रवचन लगता, ऐसी ही होगी॥
शब्द-शब्द अक्षर अक्षर सुन, खिलते आत्म बसंत है। मेरी.....

ईश अर्चना हुयी न मेरी, गया न चारों धाम।
शास्त्रों का अभ्यास मुझे ना, मिला न आतमराम॥
लेकिन गुरु को पाके लगता, मिल गए सारे पंथ हैं। मेरी.....

104. गुरु (प्रभु) तुम हो मेरी, पतंग की डोर

गुरु (प्रभु) तुम हो मेरी, पतंग की डोर।
थामे रहना, खींचे रहना, जिन चरणों की ओर॥
गुरु...
मैं कागज था रद्दी वाला, क्या था मेरा मोल।
मुझको उठा के, अपना बना के, कर डाला अनमोल॥
मुझ भूले को, मुझ भटके को, दो भव कानन, छोर।
गुरु...
नाजुक मेरी डोरी पतंग, गुरुवर संभाले रखना॥
मोह माया के तूफानों से, मुझको बचाए रखना॥
मुझको छुपा लो निज आँचल में, चुरा न ले कोई चोर
गुरु...
गुरु चरणों का ऊँचा हिमालय, नभ जैसा विस्तार
सूरज चंदा तारों के भी, ले चलना अब पार
तेरी कृपा से मैं भी पाऊँ, परमातम की भोर
गुरु...
श्रद्धा भक्ति के धागे से, बाँधा तीर कमान।
ठुमके लगा के, ऊँचा उड़ा के, मुझको दी पहचान॥
कट कर नीचे, गिर न जाऊँ, पकड़े रहो चित चोर-
गुरु...
मिथ्या कषायों की झाड़ी में, उलझे न मेरी पतंग।
भोगों के जल से गल न जाये, दो अपना रंगो-संग
'सुव्रत' को मुक्ति महल तक उड़ाने, गुरु तुम लगा दो जोर।

105. गुरु कृपा की औषधि से

गुरु कृपा की औषधि से स्वस्थ हो संन्यास में।
गुरु ही मेरी हों नजर में, गुरु ही हों हर श्वांस में॥
गुरु ही हो विश्वास में

मैं अकेला चित्त चंचल, धीमी मेरी चाल है।
पाँव थकते, दूर मंजिल, मुक्तिपथ भी विशाल है॥
बस तेरा पाकर सहारा, मैं उड़ूं आकाश में। गुरु कृपा...

चाहतों का बाग अपना, त्याग से वैराग्य हैं॥
बस इसी से मैं तड़फता, फिर कहाँ सौभाग्य है?
गुरु–कृपा बिन जिंदगी क्या? चलती फिरती लाश मैं। गुरु कृपा...

मैं अटकता ही रहा हूँ, इस जगत के जाल में।
गम अधिक खुशियाँ तनिक पा, हो गया कंगाल मैं॥
गम से सजी इन महफिलों से, ऊब जाऊँ काश! मैं... गुरु कृपा...
चाँद तारों की चमक में मैं गुमा हर बार हूँ।
आत्म ज्योति जल न पाई, मैं जला कई बार हूँ॥
अब उजाला पाके 'सुव्रत', पाऊँ आत्म प्रकाश मैं। गुरु कृपा...

106. अब तक जो ना राह चुनी वो

अब तक जो ना राह चुनी वो, राह चुनो दिल से॥
तीर्थंकर की प्रतिमाओं को, नमन करो मिल के।

खिला फूल भी मुरझा जाता शाम ढले जैसे।
मुरझाये उस झड़े फूल से काम चले कैसे॥
मानव जीवन पुष्प अनोखा मिले नहीं फिर से।
तीर्थंकर.....

किसने साथ निभाया अपना कौन सहारा दे।
किसने मारा कौन बचाये कौन किनारा दे॥
इन बिन्दु पर चिन्तन करके, जुड़ लो जिनवर से।
तीर्थंकर.....

हम जो चाहें वही करें पर, हो प्रभु के मन का।
प्रभु के मन का अगर, किया तो, हो अपने मन का॥
'सुव्रत' अपने मन की करने, लो आज्ञा प्रभु से।
तीर्थंकर.....

107. देखो तो विद्या-गुरुवर

देखो तो विद्या-गुरुवर, रत्नों को लुटाते हैं।
भक्तों की झोली भर के-2, किस्मत को जगाते हैं॥

गुरु-नाम हमको प्यारा, है अपनी जिन्दगी से।
हैं जिंदा आज वंदा, गुरुवर की वन्दगी से॥
चरणों की धूलि हम तो-2, माथे से लगाते हैं।
देखो...

गुरुवर की रहमतों की, सौगात जो न मिलती।
नाचीज़ इस भगत की, औकात फिर तो क्या थी॥
गुरु ने उठाया हमको-2, हम सिर को झुकाते हैं।
देखो...

धर्म धारण
की है उदाहरण
की चीज नहीं

108. गजल

शहंशाहों की हस्ती से निकलना है हमें।
गरीबों की गम परस्तिश में मिलना है हमें।।
झड़ने सड़ने मुरझाने के पहले-पहले।
शूलों में फूलों सा खुलकर खिलना है हमें।।
कदम थकें या छाले आयें मंजिल पथ पर।
सूर्योदय से सूर्यास्त तक चलना है हमें।।
अन्दर गम का सरगम बाहर आँधी तूंफा।
हर हालों में मुखड़े अपने सिलना है हमें।।
संघर्षो से भरी जिन्दगी हमको प्यारी।
आहिस्ता आहिस्ता पर निकलना है हमें।।
हंगामों को छोड़ सुलह की बीन बजा के।
दिलदारों की बस्ती में मचलना है हमें।।
भूल गिले शिकवे लाचारी 'सुव्रत' अब तो।
नाचना आये या ना आये हिलना है हमें।।
शहंशाहों की हस्ती से निकलना है हमें।
गरीबों की गम परस्तिश में मिलना है हमें।।

109. हम इस कदर से

हम इस कदर से टूटे न होते।
अगर हमसे अपने रूठे न होते।।

गर न जुदा होती, शाखा शजर से,
तो पत्ते बहारों में, सूखे न होते।।

होती गले में भी माला सुकूं की,
गर प्यार के मोती फूटे न होते।।

अपनी भी होती साहिल पे किश्ती,
हम उनके हाथों से छूटे न होते।।

होते अगर दिल पत्थर सरीखे,
तो नफरत की आँधी से टूटे न होते।।

अपना भी घर होता जैसे शिवालय,
बेकसों से घर गर फूँके न होते।।

पाते न 'सुव्रत' गमों के जमाने,
गैरों के कैफे गर लूटे न होते ।।

हम इस कदर से टूटे न होते।
अगर हमसे अपने रूठे न होते।।

जैन भजन - 1

लै मेरे विद्या गुरु है बैरागी मेरे ...

1. सूट बूट तो उन्हें न भाएं ।
   वे तो नग्न रूप में हैं राजी ।। मेरे ...
2. बंगला कोठी उन्हें न भाएं ।
   वे तो वन जंगल में हैं राजी ।। मेरे ...
3. गद्दा सोफा उन्हें न भाएं ।
   वे तो काठ-तखत पे हैं राजी ।। मेरे ...
4. गाडी घोड़ा उन्हें न भाएं ।
   वे तो पैदल- पैदल हैं राजी ।। मेरे ...
5. माल- मसाले उन्हें न भाएं ।
   वे तो प्रासुक भोजन में राजी।। मेरे ...
6. रसना लिम्का उन्हें न भाएं ।
   वे तो प्रासुक जल में हैं राजी ।। मेरे ...
7. पान सुपाज़ी उन्हें न भाएं ।
   वे तो शास्त्र- पुराणों में राजी ।। मेरेज
8. ए.सी. कूलर उन्हें न भाएं ।
   वे तो आत्म ध्यान में हैं राजी ।। मेरे ...
9. दुनियादारी उन्हें न भाएं ।
   वे तो संयम सुव्रत में राजी।। मेरे ...

जैन भजन - 2

थामे नाम जो तुम्हारा , जिसने मन से तुम्हें पुकारा ।
उसकी रोज दिवाली हो ,मिटती दुख कंगाली हो।। थामे...
जय जय वृषभनाथ जी, जय जय अजितनाथ जी।
जय जय शंभवनाथ जी, जय अभिनंदननाथ जी।।
जय-जय सुमतिनाथ जी, जय जय पद्मप्रभु जी।
जय-जय सुपार्श्वनाथ जी, जय-जय चंदप्रभु जी।।
जय-जय सुविधिनाथ जी, जय-जय शीतलनाथ जी।
जय-जय श्रेयांशनाथ जी, जय-जय वासुपूज्य जी।।
जय-जय विमलनाथ जी, जय-जय अनंतनाथ जी।
जय-जय धर्मनाथ जी, जय-जय शांतिनाथ जी।।
जय-जय कुंथुनाथ जी, जय-जय अरहनाथ जी।
जय-जय मल्लिनाथ जी, जय मुनिसुव्रतनाथ जी।।
जय-जय नमिनाथ जी, जय-जय नेमिनाथ जी।
जय-जय पार्श्वनाथ जी, जय-जय महावीर जी।।
जय-जय णमोकार की, जय-जय नवों देव की।
जय-जय जैन धर्म की, जय-जय विद्यागुरु की।।थामे...
भूले नाम जो तुम्हारा, उसका कोई नहीं सहारा।
वो तो दर-दर भटके रे, उसके कर्म न कटते रे।।
उसका कहां वसेरा हो, उसको दुख ने घेरा हो।
इसमें दोष है हमारा, ऐसा होगा न दोबारा,।।थामे...
पूजे नाम जो तुम्हारा, उसको 'सुव्रत' मिले किनारा।
उसने शांति पाई हो, उसकी मुक्ति सगाई हो।। थामे...

जैन भजन - 3(चातुर्मास विदाई भजन)

चातुर्मास हुआ खुशियों से, गुरु विदाई अब सह न सकें।
जिन आज्ञा से रुक न सकें गुरु, परवश हैं हम जा न सकें।।
पीछे-पीछे चलकर हमनें, गुरु के विहार कराए थे।
नगर आगमन के अवसर पर, फूले नहीं समाए थे।।
जलते रह गए दिए आरती, आँगन चौक पुरा न सकें।चातुर्मास...
प्रवचन सुनते आगम पढ़ते, सुबह शाम भक्ति करते।
पड़गाहन के प्यासे नयना , गुरु-प्रतीक्षा रत रहते।।
दान-पुण्य कैसे अब होंगे, गुरु चरण भी धुला न सकें।चातुर्मास...
जब से चरण तुम्हारे गुरुवर, पड़े हमारी नगरी में।
तब से घर-घर लौटी खुशियाँ,भरी हृदय की गगरी में।।
कैसे यह दुख दर्द संभालें, आँसू भी अब रुक न सकें।चातुर्मास...
जो माँ-बापू जन्मे तुमको, वो भी रोक सके न तुम्हें।
फिर कैसे हम रोक सकेंगे, अतः साथ ले चलो हमें।।
गुरु के साथ रहे हम हरदम, इतना पुण्य कमा न सकें। चातुर्मास...
करके क्षमा हमारी भूलें, आशीर्वाद यही देना।
जल्दी लौट के आना गुरुवर, या फिर हमें बुला लेना।।
विद्या गुरु को रहे समर्पित, %सुव्रत% को भी भुला न सकें।
चातुर्मास...जैन

भजन - 4 (लय- घर से निकलते ही...)

घर से निकलते ही , कुछ दूर चलते ही, आएगा मंदिर नजर।
भगवन से मिलते ही, चारित में ढलते ही, आएगी मंजिल नजर ।।घर से..
घर किसका ठहरा-किसको दी छाया, किसका ना उजडा-जिसने वसाया।
फिर क्यों वसाएं- ऐसा ठिकाना, क्यों ऐसे गम से-खुद को रुलाना।।
बेगाना कर दे जो, अपना न दर दे जो ,त्यागो रे! ऐसा ये घर।घर...
क्या लेके आए-क्या लेके जाना , खाली ही आए-खाली ही जाना ।
फिर क्यों कमाके-पापों की माया ,सुख चैन अपना-फिर क्यों भुलाया ।।
बेचैन कर दे जो, कष्टों से भर दे जो,त्यागो रे! ऐसा सफर। घर...
घर छूटेगा-तो दुख होगा , घर छोड़ोगे-तो सुख होगा।
सो घर को छोड़ो-चैतन्य ध्याओ ,दुख जाल त्यागो- आनन्द पाओ।।
'सुव्रत' को धरते ही,अपने में रमते ही ,आएगी आतम लहर।घर...
घर से निकलते ही , कुछ दूर चलते ही, आएगा मंदिर नजर।
भगवन से मिलते ही, चारित में ढलते ही,आएगी मंजिल नजर ।।घर...

जैन भजन - 5(लय -घर से निकलते ही)

घर से निकलना है ,हर रोज चलना है, ऐसा है अपना सफर।
खुद ही संभालना है, निज से भी मिलना है , मंजिल भी आए नजर।।
कर्मों का पहरा-भोगों की राहें,विपरीत मौसम-थकती निगाहें।
छोटा सा जीवन-कंधे है बोझिल, लम्बी सी यात्रा-ओझल है मंजिल।।
जीवन भी मंगल हो,चेतन भी उज्ज्वल हो,ऐसी ही पाने खबर।घर...
बंधन को तोड़ के-दुनियाँ को छोड़ के,जाना मुझे वहाँ-जल्दी से दौड के।
सुख शांति हो जहाँ-गम ना विकार हों, सुन्दर सा आशियाँ-प्यारा सा प्यार हो।।
सपना साकार हो,सबका उद्धार ही,आत्मा की आए लहर।घर..
कोई न काम हो-कोई न कामना, कोई न याचना- केवल हो प्रार्थना।
सम्यक हो साधना-यात्रा विश्रांत हो, निज में विश्राम हो-मंजिल लोकांत हो।।
इतना प्रभु कर दे , 'सुव्रत' को वर दे ,निज सम ही देना डगर।घर...
घर से निकलना है ,हर रोज चलना है, ऐसा है अपना सफर।
खुद ही संभालना है, निज से भी मिलना है , मंजिल भी आए नजर।।

जैन भजन - 6(भारत देश गीत)

केवल धरती का नहीं, टुकड़ा भारत देश।
विश्व-गुरु की मान्यता,दया धर्म संदेश।।
भारत देश महान विश्व में, भारत देश... महान।-2
सच्चे देव शास्त्र गुरुओं के, तीरथ का स्थान।। विश्व में,भारत...

1. जहाँ कहीं भी दृष्टि डालो, जहां कहीं भी शीश झुका लो।
जहाँ कहीं भी अर्घ्य चढ़ा लो,जहाँ कहीं भी ध्यान लगा लो।।
भारत के कण-कण में देखो, झलकेंगे भगवान ।
विश्व में, भारत...

2. पांच धाम की करो अर्चना , चार दिशा की करो वंदना।
तीन रत्न की करो साधना, एक आत्म की करो भावना।।-2
भारत से ही मोक्ष मिलेगा,परमातम का ज्ञान।
विश्व में,भारत...

3. पर्वत पर्वत ईश मिलेंगे, वन-वन में जगदीश मिलेंगे।
नदी तटों पर तीर्थ मिलेंगे, ब्रह्म विहारी श्रीश मिलेंगे।।
भारत के आशीष मिलेंगे, माँगो तो वरदान।
विश्व में, भारत...

4. भारत की ये धरती मैया, शिव का नंदी श्याम की गैया।
बचपन है श्री कृष्ण कन्हैया, योवन है श्री राम रमैया।।
कहे अहिंसा परमो धर्मः, महावीर भगवान।
विश्व में, भारत...

5. धर्म पुण्य जब खूब कमाओ, करो प्रार्थना भावना भाओ।
तब भारत में जीवन पाओ, मानव बनकर आतम ध्याओ।।
कर्म काटकर खुद बन जाओ, परम पूज्य भगवान।
विश्व में,भारत...

6. पूरव में होता सूर्योदय, पश्चिम में मरुभूमि की जय।
उत्तर में है उच्च हिमालय, दक्षिण में सागर का आलय।।
भारत के दिल में वसते हैं, दसों दिशा के गान।
विश्व में,भारत...

7. कहीं हिन्दु के हृदय दिखेंगे, कहीं जैन के निलय दिखेंगे।
कहीं सिक्ख ईसाई दिखेंगे, कहीं-कहीं इस्लाम दिखेंगे।।
सभी धर्म समभाव यहाँ पर, दिखते एक समान।
विश्व में,भारत...

8. कहीं बालकों की किलकारी, कही बहन बेटी माँ नारी।
कहीं जवानों की अधिकारी, कहीं पुरुष की भागीदारी।।
कहीं बुजुर्गों की छाया में, खुश हैं हर इन्सान।
विश्व में,भारत...

9. कहीं भक्ति के रहे शिवालय, कहीं ज्ञान के हैं विद्यालय।
कही तपस्या के धर्मालय, कहीं मुक्ति के दिखें जिनालय।।
पुण्य भूमि है तीर्थ भूमि है, 'सुव्रत' का स्थान।
विश्व में,भारत...

जैन भजन - 7 (भारत जैन तीर्थ गीत)

देवों का देश, शास्त्रों का देश,गुरुओं का देश,तीर्थों का देश
तीर्थो का देश मेरा भारत महान है-(जय भारत...2)
कहीं भी शीश झुका लो- कहीं भी अर्घ्य चज़ लो।
जहां दृष्टि डालो वहीं तीरथ स्थान है।तीर्थों का देश ...
भारत महान मेरा भारत महान है -2- जहाँ...

1. जय जय जय सम्मेद शिखर जी, तीर्थों का जो तीर्थेश्वर जी।
   सिद्ध अनन्तानन्त यहीं से, मिले मोक्ष की निज रमणी से।।
   मुक्त यहीं से बीस जिनेश्वर, मुक्तिवधू से किए स्वयंवर।
   एक बार वंदे जो कोई, ताहि नरक पशु गति नहीं होई।।
   शाश्वत यह तीर्थ है, शाश्वत निर्वाण है ।तीर्थों का देश ...

2. जय जय जय अष्टापद गिरि की, सिद्धभूमि आदीश्वर जी की।
   भरत बाहुबली वीर्य अनन्ता, बने सिद्ध सिद्धेश्वर कंता।।
   जय जय जय चम्पापुर धामा, वासुपूज्य प्रभु का निर्वाणा।
   पांचों कल्याणक के धारी, भक्तों के हैं अतिशयकारी।।
   तीर्थों का तीर्थ है, आतम कल्याण है तीर्थों का देश ...

3. जय जय जय गिरिनार गिरि की, नेमिनाथ की मुक्तिपुरी की।
   राज्य रमा राजुल तज आए , मुक्ति वल्लभा व्याह रचाए।।
   जय जय जय पावापुर पावन, महावीर का मोक्ष सुहावन।
   सो लाडू निर्वाण चढ़ाएं , गौतम गुरु के दीप जलाएं।।
   पांचों ये तीर्थ तो, भक्तों के प्राण हैं ।तीर्थों का देश ...

4. पांच धाम की करो अर्चना, चार-दिशा की करो वंदना।
   तीन रत्न की करो साधना, एक आत्म की करो भावना।।
   'सुब्रत' का मोक्ष है, विद्या का मुकाम है।तीर्थों का देश ...

जैन भजन - 8 (जिनवाणी मैया)

जिनवाणी मैया की सुनो पुकार।
आगे या पीछे, सबको तजना है संसार।।
मैया कहे पुकार के- सुनो जीव संसार के।
जीवन वीता जाए-2(4 कोरस में)
कर्म कहानी त्याग जा, दुख की निशानी त्याग जा।
महा मनुज पर्याय, तू फिर पाए न पाए ।।
जीवन वीता जाए - (4 कोरस में)
तेरी राह में कर्मों ने, शूल बिछाए।
डाली-डाली बाधा डाली, तुझको सताए।।
तुझको सताए...कर्म कहानी...
जिनवाणी माँ मुस्काए, घर बार यही तो समझाए ।
हाय तेरा मैन क्यूँ भरमाए। हो..
मुक्तिपुरी की तू भी, कोई धुन बजा ले भाई।
तू भी मुस्कुरा ले हो-मुक्तिपुरी की तू भी,
कोई धुन बजा ले भाई।कर्म कहानी..

जैन भजन - 9 (लय-बड़ी देर भई)

ओ! कुंडलपुर के बाबा, तूने क्या जादू कर डाला।
भक्ति के रंग में हम सब रंग गए , मन हुआ रे मतवाला ।।ओ!...

1. जिन दर्शन का महा महोत्सव , सब के भाग्य संवारेगा।
   भारत का हर बच्चा बच्चा, स्वामी तुम्हें पुकारेगा ।।
   तुमने उसको तार दिया है , जो फेरे प्रभु माला।
   ओ! कुंडलपुर...
2. अतिशयकारी वृषभनाथ जी ,हम भक्तों के रखवाले ।
   ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि दाता ,रोग-शोक हरने वाले ।।
   हमें बना लो अपने जैसा, हम गाए गुणमाला।
   ओ! कुंडलपुर...
3. रोते-रोते आने वाले ,हंसते-हंसते जाते हैं।
   खाली झोली लाने वाले ,झोली भर ले जाते हैं।।
   तुमसे तुमको सुव्रत चाहें ,खुले मोक्ष का ताला ।
   ओ! कुंडलपुर...

जैन भजन - 10 (लय-इक रोज तो...)

दुख दर्द का सागर है, कर्मों की रबानी है।
जिंदगी और कुछ भी नहीं, दो आँखो का पानी है।।
दुख दर्द जहाँ न हों, जहां व्यसनों की आदत न हों।
जहां शोक वियोग न हों, जहां कोई बगावत न हों।।
ऐसी दुनियाँ रचाकर वहाँ, निज-की नगरी वसानी है।

जिंदगी---

रिश्ते नातों से अपने केवल, आँखों से आँसू झलके हैं।
मेहनत करते रहे रात दिन, सुख ना पाए यहाँ पल के हैं।।
हाथ मलते रहेंगे यहाँ, पूँजी अपनी गवानी है।

जिंदगी---

रोते-रोते ही हम जन्में हैं, करके शिकवे शिकायत जिये।
होके हम तो उदास हि मरे, हाय! जीवन में कुछ ना किये।।
अपने अनमोल जीवन की ,कीमत हमको लगानी है।

जिंदगी---

हमको अपनी न पहचान है, भूले भटके हम इंसान हैं।
यदि सम्यक् पथ मिल जाए तो, हम भी आगामी भगवान हैं।।
मुक्ति का मार्ग 'सुव्रत' मिले, ऐसी विद्या जगानी है।

जिंदगी---

जैन भजन - 11(लय-बहुत प्यार करते...)

बहुत याद आते हैं, गुरु के चरण।-2
शरण हमको ले लो, अपनी शरण।। बहुत--

1. गुरु वंदना ही, प्रभु वंदना है।
   गुरु मिल गए फिर ,जाना कहाँ है।।
   गुरु दर्श पाने -2,करते यतन।

   बहुत याद आते हैं,...

2. गुरु की कृपा ही है, जीवन हमारा।
   गुरु की नजर में ही, हमको संवारा।।
   गुरु के चरण ही हैं, सुख के सदन।

   बहुत याद आते हैं, ...

3. गुरुवर के दर्शन, तीर्थों के वंदन।
   गुरुवर की वाणी, मंत्रों के मंथन।।
   गुरुवर की चर्या, 'सुव्रत' का धन।

   बहुत याद आते हैं,...

जैन भजन-12 (लय-ओ! जोगी तेरो...)

ओ !विद्यागुरु जी, आइऔ मोरे गाँव ।-
इंतजार में गुजरै उमरिया, कब मैं पखारु तोरे पांव।
ओ !विद्यागुरु...
ऊंची नीची घाटी मिलेगी ,कितउं पे चंदन माटी मिलेगी ।
कितउं चिलकतौ घाम मिलेगौ ,कितउं पे जूडी जूडी छाँव ।।
ओ !विद्यागुरु...
कब सें पुकारै मोरी नगरिया, अनजानी सी हॉट बजरिया।।
रंग बिरंगी दुनियाँ तजकें, भूल नें जइयौ मोरो गाँव ।।
ओ !विद्यागुरु...
तोय गाँव के मंदिर पुकारें,भक्तों के चौके चौक निहारें ।
कितउं पे करियौ आहार गुरुजी ,कितउं धुला लइयौ पाँव।।
ओ !विद्यागुरु...
दीया और बस बाती पूजा की थाली,
बच्चे बूढ़े भक्त और माली ।
'सुव्रत' को भी आशीष दोकें, दे दइयौ अपनी छाँव।।
ओ !विद्यागुरु...

जैन भजन-13 (बुंदेली)

ऐसी माटी न दुनियाँ के खण्ड -खण्ड में।
जनम पायें दुबारा बुंदेलखण्ड में ।।
नैनागिरी कुंडलपुर खजुराहो प्यारे।
बीना बारह ईशुरवारा पटेरिया जी न्यारे ॥
मढिया जी जइयौ कि नौ नौ लगत ठंड में ।
जनम पायें दुबारा बुंदेलखण्ड में ।।
पवाजी बंधाजी अहारजी पपोरा।
देवगड़ बजरंगगड़ कुरगुवांजी जखौरा ॥
सोनागिरि सोहे कि मन नाचै पटनागंज में।
जनम पायें दुबारा बुंदेलखण्ड में ।।
कोनी जी थूवोन जी द्रौणागिरि पनागर।
बालाबेहट सेंरोनजी नवागड़ भद्दलपुर
तीरथ करलो कि शांति मिल है बहोरीबंद में।
जनम पायें दुबारा बुंदेलखण्ड में ।।
बानपुर चंदेरी भियादांत बांसी।
गोलाकोट पचराई पीपरा झाँसी ॥
ओरछा जइयौ कि मन झूमै परमानंद में।
जनम पायें दुबारा बुंदेलखण्ड में ।।

हीरा से बंदेलखण्ड में मंदिर किले हैं।
सुव्रत के स्वामी विद्यागुरुवर मिले हैं।।
समवसरण लागे संघों के झुण्ड – झुण्ड में।
जनम पायें दुबारा बुंदेलखण्ड में ।।
ऐसी माटी न दुनियाँ के खण्ड –खण्ड में।
जनम पायें दुबारा बुंदेलखण्ड में ।।

जैन भजन–14(बुंदेली)

मन हो रऔ है चौका लगाउनें – गुरुवर खौं घर पै बुलाउनें ।–2
दान के होते चार प्रकार, औषध शास्त्र अभय आहार ,
इनकी महिमा अपरम्पार, दान दै कें आहार अब कराउनें 77
गुरुवर खौं ...
विद्यासागर मुनि महाराज ,मोरी भी रख लइओ लाज ,
चौका में आ जइऔ आज,चरणों खौं चौका में धुलाउनें ॥
गुरुवर खौं ...
नौनें सें दें कें आहार,हाथ जोज़करुं पुकार ,
फिर अइऔ लेवे आहार,श्रद्धा भक्ति सें आहार कराउनें।।
गुरुवर खौं ...
आहार करकें हे! महाराज ,मोखों संगै रखलो नाथ,
दीक्षा कौ देऔ आशीर्वाद, दीक्षा पाकें तो धन्य हो जाउनें ॥
गुरुवर खौं ...

जैन भजन–15(बुंदेली)

बब्बा – बब्बा कहाँ के – कहाँ के ?धरमपुरा के, धरमपुरा के ।।–2

बऊ सरक गईं नदिया में , बब्बा ढूंढें बगिया में।

बब्बा खों लग गऔ कांटौ, बब्बा लै गऔ सन्नाटौ।।

धर दई टोपी, पर लए पांव, अब न लें हों, बऊ कौ नांव ॥

बब्बा – बब्बा कहाँ के – कहाँ के ?धरमपुरा के, धरमपुरा के ।।–2

बब्बा नें बऊ खों छोड़ौ, गुरुवर सें नाता जोड़ौ ।

लै लई दीक्षा भय महाराज , पडगाहन खों कड गए आज ।।

बाब्बा खों बऊ नें पड़गा कें ,नौनें सें आहार करा कें।

नची बधाइया दऔ कलाकंद, बांटौ बुलौआ आओ आनंद ।।

बब्बा – बब्बा कहाँ के – कहाँ के ?धरमपुरा के, धरमपुरा के ।।–2

नोटः-